श्री नाथ सिद्ध पाठ

रचना-योगी विलासनाथ

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तरांचल)
फोन:-01334-226583

श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार आदिनाथ (ॐकार) ज्योति स्वरुप बोलिये। उदयनाथ पार्वती (धरती) स्वरुप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्माजी (जल) स्वरुप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णुजी (खड्ग खाण्ड तेज) स्वरुप बोलिये। अचल-अचम्भेनाथ शेष (वायु) स्वरुप बोलिये। गजबेलि गज कंथड़नाथ गणेश जी (गजहस्ती) स्वरुप बोलिये। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ चन्द्रमा (अठारह भार वनस्पति) स्वरुप बोलिये। माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ मत्स्य (माया) स्वरुप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ शिव (बाल) स्वरुप बोलिये।

श्री नाथ सिद्ध पाठ

पाठ-गोरखतंत्र मंत्र-शबदी- आरती
भजन-विधि विधान सहित

❋ श्री नाथ सिद्ध पाठ ❋ 9 नाथ 84 सिद्ध परम्परा पाठ

❋ नवनाथ सृष्टि प्रादुर्भाव

❋ गोरख सिद्ध शाबर तंत्र, मंत्र आरती एवं भजन

काव्य रचनाकार

योगी विलासनाथ

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड हरिद्वार (उत्तरांचल)

फोन-01334-226583

प्रकाशक:

श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक (हरियाणा)

14 जनवरी 2006 (मकर संक्रान्ति) सन् 2062, पौष शुक्ल

प्रथम संस्करण-2000 प्रति

मूल्य 35/-

इस पुस्तक के किसी भी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ

शुभ आशीर्वाद

आपके द्वारा की हुई यह काव्य रचना "श्री नाथ सिद्ध पाठ" तथा श्री नाथ सिद्ध गुरु-शिष्य परंपरा, श्री नवनाथ सृष्टी प्रादुर्भाव, आगे-आगे गोरख जागे, गोरख शाबर तंत्र, आरती, शबदी एवं भजनों का हमने अध्ययन किया। महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी तथा सतगुरु-शिष्य-नवनाथ, चौरासी सिद्ध आदि पंथ परंपरा की नाथ संप्रदाय संस्कृति को उजागर करते हुए यह भक्ति भाव पाठ एवं गुरुभक्ति का चैतन्यभाव को बड़े ही संजीदा ढंग से काव्य रुप में की हुई रचना अत्यंत सराहनीय है।

इस "श्री नाथ सिद्ध पाठ" द्वारा नाथ सिद्ध योगेश्वरों एवं भक्तजनों के अंतर्भाव प्रगट होकर वह नाथ पंथ सनातन परंपरा कि भक्ति में आविर्भुत होकर उन्हें पाठ विधि-अनुष्ठान-उपसाना आदि करने के लिए यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी सहायक सिद्ध होगा। यह ग्रंथ साधु, संत, नाथ योगी, जपी-तपी, भक्तजनों के जानकारी हेतु तथा प्रचार-प्रसार हेतु सहज सुलभ सुविधा रुप में प्रगट होगा।

यह काव्य रसधारा की रचना देखते हुए यह प्रतीत होता है कि आपको श्री नाथ सिद्ध आदरणीय सतगुरु, नवनाथ, चौरासी सिद्ध, संत, महंत, पीरों की कृपा आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

अत: गुरु गोरक्षनाथ जी से प्रार्थना करते हैं की आपके कृपा सानध्यि में उपासना करते हुए इन्हें सतत् कार्य अनुभूति होती रहे।

इति शुभम्।

शुभेच्छुक

महंत अवेद्यनाथ जी
सभापति (योगी महासभा)
श्री गोरक्ष पीठाधीश्वर (गोरखपुर)
पूर्व सासंद (लोकसभा)

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ

शुभ आशीर्वाद

आपके द्वारा किये गये इस काव्य ग्रंथ को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि यह नाथ सिद्धों की गुरु-शिष्य सनातन परंपरा का तथा नवनाथ सृष्टी प्रादुर्भाव, आगे-आगे गोरख जागे, शब्द-विलास, आरती, भजनों को देखते हुए अति प्रसन्नता हो रही है जो की यह काव्य पाठ रचना नाथ सिद्ध साधु संत तथा नाथ भक्त अनुयायियों को पाठ उपासना करते हुए इस काव्य रसधारा में उन्हें नाथ सिद्धों की आध्यात्मिक अनुभूति एवं भक्ति-भाव प्रगट होते हुए आनंद प्राप्त होगा तथा उपासना अनुष्ठान एवं भजन करते हुए अपेक्षित लाभ होगा।

यह रचना नाथ संप्रदाय की संस्कृति को उजागर करते हुए प्रचार-प्रसार में अत्यंत उपयुक्त सिद्ध होगी। जो की मानव जन कल्याण हेतु भक्ति रसामृत का सभी पान कर सकते हैं। आपका यह प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय एवं मंगलकारक है।

हम विश्वास करते हैं कि भविष्य में नाथ संप्रदाय के संबंध में ऐसी अनेकों रचनाएं करने में आप यशस्वी होंगे एवं प्रचार-प्रसार में बहुत योगदान करेंगे।

संत शिरोमणी बाबा मस्तनाथ जी की कृपा आशीर्वाद से आप अपने इस सद्कार्य को करते हुए यशोभागी बनते रहें।

शुभकामनाओं सहित

शुभेच्छुक

महंत चांदनाथ जी योगी

उपसभापति (योगी महासभा)

मठाधीश्वर, श्री मठ अस्थल बोहर

विधायक (राजस्थान)

आशीर्वचन

प्रिय शिष्य योगी विलासनाथ

शुभ आशीर्वाद

श्री नाथ सिद्ध पाठ, श्री नाथ सिद्ध गुरु शिष्य परम्परा, नवनाथ सृष्टि प्रादुर्भाव, आगे-आगे गोरख जागे, गोरख शाबर तंत्र मंत्र, आरती, शब्दी एवं भजन, इत्यादि को देखते हुये यह महसूस होता है कि संसार के अंदर जो जीव जन्म लेता है। वह दृष्य-अदृष्य पाप-पुण्य बंधनो में बंधकर जन्म लेता है। तत् पश्चात् निर्गुण सगुण में आकर कर्ता भोक्ता बनता है। जिसके निवारण हेतु जीव को आत्मस्वरुप की आवश्यकता होती है। उस आवश्यकता को समझते हुये बंधन से मुक्त होकर आत्मसाक्षात्कारी, सिद्ध होता है। 'सिद्ध' शब्द जहां इस्तेमाल किया जाता है, उसी को शास्त्रीय भाषा में 'परिपूर्ण' कहा जाता है। पूर्ण अवस्था ही आत्मा का आनंद है। इस आनंद का सुख स्वाद समझने के लिये देव, गुरु, इष्ट इनकी आवश्यकता होती है। जिस इष्ट की हम उपासना करते हैं, वह इष्ट हमें इष्टमय बना देता है। इसीलिए नवनाथ चौरासी सिद्ध हमारे जीव-दशा को पूर्ण करने हेतु इष्ट हैं और इष्ट की उपासना करना जीव का आदय कर्तव्य है। नवनाथ, चौरासी सिद्ध सगुण-निर्गुण सभी प्रकार से परिपूर्ण है। जो भी जीव यह इष्ट की प्राप्ति करता है वह स्वयंपूर्ण हो जाता है। अत: यह श्रीनाथ सिद्ध पाठ पढते हुये सभी को अपेक्षित तथा इष्ट प्राप्ति एवं आत्म अनुभूति कि प्राप्ति होगी।

यह शुभ आशीर्वाद है।

इति शुभम

शुभेच्छुक

श्री योगी आनन्दनाथ जी

महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष

बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

नाथ मनीषी

श्री योगी विलासनाथ जी

आपके द्वारा जीव को शिव बनाने में जो सहयोग इस वाङ्मय द्वारा किया गया है, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

इस महति प्रयास को कोटिशा धन्यवाद!

श्री योगी राकेश नाथ जी
सहायक मंत्री
अवधूत योगी महासभा
हरिद्वार

मनोगत

यूँ तो दुनियां में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, तंत्र-मंत्र, उपासना आदि बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ परमात्मा प्राप्ति के लिये है। जो जनसाधारण व्यक्ति आज के व्यस्त जीवन में कर नहीं पाता तथा यह सब उपासनायें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में विदयमान थी। जो फल प्रदान करती थी। अतः कलियुग में मात्र नाम पाठ करने पर इष्ट की प्राप्ति होने का सुलभ सुगम उपाय बताया गया है। जिसे नाथ संप्रदाय भी स्वीकार करता है। जोकि नाम पाठ, मंत्र पाठ करते हुये इष्ट कि प्राप्ति होकर जीव मुक्त होते हुये जीव-शिव का अव्यक्त रुप में स्व-स्वरुप हो जाये। इस ''श्री नाथ सिद्ध पाठ'' में अनुक्रमे नाथ सिद्ध पाठ, नाथ सिद्ध गुरु-शिष्य परम्परा, नवनाथ सृष्टी प्रादुर्भाव, आगे-आगे गोरख जागे इत्यादि यह पाठ विधियाँ नाम-संकीर्तन के उद्देश्य से निर्माण किया गया है। उसी प्रकार इसमें "गोरक्ष शाबर तंत्र" और ''बुद्धिदाता शाबर मंत्र'' भजन, आरती इत्यादि का सामावेश करते हुये हमारे नाथ सम्प्रदाय की परम्परा कि संस्कृति को उजागर करने का प्रयास किया है। जो की नाथ-सिद्ध, साधु-संत एवं भक्त अनुयायी इस पाठ को सहज सरल नाम संकीर्तन तथा साधना करते हुये नाथ सिद्धों कि नाम भक्ति का आनंद ले सके और ज्ञान-भक्ति-मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

हम आशा करते हैं कि श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के आशीर्वाद एवं सद्गरु कृपा तथा नाथ सिद्ध संप्रदाय अधिकारी और नाथ सिद्धों कि कृपा आशिर्वाद से यह नाम संकीर्तन पाठ को करते हुये अपेक्षित फल-प्राप्ति होगी।

इस काव्य-रचना में मेरे गुरु भाई योगी प्रमोदनाथ (कोठारी) एवं मोतीनाथ (प्रबंधक) एवं मेरे नाथ सम्प्रदायिक नाथ सिद्ध महात्माओं ने सहृदय सत्प्रेरणा दी। इन सबका मैं आभारी हूँ।

टंकण में हुई अशुद्धियों के लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ
योगी महासभा, हरिद्वार

।।ॐ शिव गोरक्ष योगी।।

अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ सं.
1.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नित्य पाठ)	8
2.	श्री नाथ सिद्धों की गुरु-शिष्य परंपरा (नित्य पाठ)	25
	गुरु वन्दना	25
	नवनाथ प्रणाली	28
	चौरासी सिद्धों की नाथ प्रणाली	33
	बारह पंथों की परंपरा	41
	पंथ आई की परंपरा	44
	कृपा दान	51
3.	श्री नवनाथ सृष्टी का प्रादुर्भाव (नित्य पाठ)	54
	नवनाथ शाबर मंत्र	62
4.	आगे-आगे गोरख जागे (नित्य पाठ)	64
5.	श्री गोरक्ष सिद्ध शाबर तंत्र (संकट मोचन तथा इच्छा कार्य पूर्ति)	72
6.	बुद्धिदाता शाबर मंत्र (विद्या ज्ञान, स्मरण शक्ति आदि की प्राप्ति हेतु)	77
7.	'आरती' गुरु गोरक्षनाथ जी की	80
8.	सतगुरु परिक्रमा	82
9.	सतगुरु प्रार्थना	84
10.	संत महिमा (भजन)	85
11.	शब्द विलास	87
	'आज भी है'	87
	'भी तो नही है'	88
	'अंतरात्मा'	89
12.	पाठ विधि	90
13.	सूचि पत्र	92

(नित्य पाठ)

श्री नाथ सिद्ध पाठ

वन्दना

ॐ गंगं गणेशनाथाय।
कृपा करो, करुणकराय।।
स्वर साम्राज्ञी सरस्वति।
कर चित्त वास, मम मुढ़मति।।
सतगुरु मेरे, अलख निरन्जन।
कृपा के सागर, ज्ञान रन्जन।।

"भजन"

।। अलख निरन्जन–ऽऽऽ–अलख निरन्जन।।

(1)

सुन्दर वो ध्यान, गुरु गोरक्ष नाथ।
मनी अन्तर ध्यान, आनन्दी, आनन्द ।।1।।
रुद्रमाल कण्ठी, बैठे बाघाम्बर।
ऐसे मनी, ध्यान निरंन्तर ।।2।।
कर्ण कुण्डल ज्योति, शशि भानु रश्मी।
गल नाद ब्राह्म, रमे अंग भस्मी ।।3।।
नाथ कहे ऐसे, सर्व मम् सुख।,
ऐसे रुप देखू, अन्तर मुख ।।4।।

(2)

देह दश द्वारी, करुँ ध्यान योग।
छूटे माया सारी, कर्म भोग ।।1।।
गुरु गोरख नाथ जपो भजो मन।
तन मन धन, समर्पण ।।2।।
शिव गोरख नाम, संसार के सार।
तुटो यम जंजाल, जन्म मृत भार ।।3।।
नाथ देव कहे, संसार क्यूं भटका।
एक नाथ नाम, नाथ घर अटका ।।4।।

(3)

चार वेद शास्त्र, पढ़े वो पढ़ाई।
अठारह पुराण, सब पण्डीताई।।1।।
कर्म धर्म कथा, व्यर्थ अभिमान।
नाथ नाम लेता, भये महाज्ञान ।।2।।
नाथ नाम योग, कहे सूक्ष्म वेद।
जिव–शिव एका, सर्वाथ साद ।।3।।
नाथ सिद्ध पाठ, गुरु गोरख नाम।
देखो सर्वत्र हि, आत्माराम ।।4।।

(4)

त्रिगुण असार, निर्गुण जो सार।
नाथ सिद्ध पाठ, सांरासार ।।1।।
सगुण–निर्गुण, सभी गुण अगुण।
नाथ बिनु मन, व्यर्थ जान ।।2।।
व्यक्त–अव्यक्त, अकार निराकार।
नाथ नाम प्रचिति, चराचर ।।3।।
नाथ गोरक्ष सिद्ध, रुप ऐसे मनी।
अनंत पुण्य राशी, जन्मोजन्मी ।।4।।

(5)

भाव बिनु भक्ति, भक्ति बिनु मुक्ति।
गुरु बिनु ज्ञान, कैसे होय ।।1।।
मन चित्त शुन्य, योग याग ध्यान।
भये गोरखनाथ, अतित प्रसन्न ।।2।।
प्रयास प्रपन्च, करे निस दिन।
क्यूँ ना करो सन्च, गोरख ध्यान ।।3।।
नाथ देव कहे, जप तप ध्यान ।
टूटो यह माया, आवागमन ।।4।।

(6)

तंत्र, मंत्र कर्म, मिले नाम सिद्धि।
भये वो उपाधि , दंभ भारी ।।1।।
भाव बिना देव, ना दिखे निःसंदेह।
गुरु बिनु भाव, कैसी होगी चाह ।।2।।
धर्म कर्म–काण्ड, बडे उजागरे।
गुरु बिनु हित, कौन करे ।।3।।
नाथ गुरु कहे, सन्त सेवा भाव।
साधु संग भाव, तरणो उपाव ।।4।।

(7)

अनुभव मोल, ज्ञान अनुरोध ।
भये ज्ञान ऐसे, सतगुरु बोध ।।1।।
जीवन की होली, कर्पूर की ज्योति ।
आत्मज्ञान मिले, मोक्ष मुक्ति ।।2।।
गुरु भक्ति भाव, मोक्ष मुक्ति सारांश।
शिव जीव ऐक्य, ज्ञानीयाँ प्रकाश ।।3।।
नाथ देव कहे, सन्तन संगति।
आत्मदेव देखे, जनी मनी ।।4।।

(8)

सागर पातक, करे महापापी ।
कैसे होय भक्ति, विपदा थापी ।।1।।
भक्त जो पतित, कैसे हो पावन ।
ना होय भक्ति, सभी दैवहिन ।।2।।
अनंत बोले व्यर्थ, वाद–विवाद।
नाथ कहे ऐसा, ना करो मद ।।3।।
कहे नाथ गोरक्ष, आत्मा एकी सर्व।
घट–घट आनन्द, होय सम्पूर्ण ।।4।।

(9)

शिव गोरक्ष नाथ, नाम लेना टेक।
भये आत्म भाव, जिव शिव एक ।।1।।
एक तत्व नाम, शिव गोरक्ष जाप।
छूटे कर्म बन्ध, अपने आप ।।2।।
नामामृत पियो, भक्ति रस मीठा।
पायो गोरखनाथ, मनोराज्य दीठा ।।3।।
नाथ देव कहे, सुनो रे सुमति।
मनो मार्ग गती, सन्तन संगति ।।4।।

(10)

कनक भुसकाई, बाल गुन्दाई।
श्रृताई भगाई, और मनसाई ।।1।।
भूचर भर्तृहरि, खेचर ही बोले।
नाथ नामा संग, तन मन डोले ।।2।।
गुरु गोरख वाचा, मनी चित्त भाव।
नाथ नाम जाप, आत्मा ही शिव।।3।।
गुरु देव कहे, गुरु गोरख बाणी ।
सर्वत्र दुर्लभ, बिरला जानी ।।4।।

(11)

गुरु बिना जाप, व्यर्थ ऐसो ज्ञान।
भक्ति कैसे करो, मारी मन ।।1।।
ऋद्धि–सिद्धि मात्र, व्यर्थ ही मान ।
उपजे ऐसे दैव, भक्ति लागे मन ।।2।।
सत्य–असत्य, कैसे कैसा धर्म ।
गुरु बिना कैसे, खोजे मर्म ।।3।।
द्वैत–अद्वैत, कैसे–कैसे ज्ञान।
गुरु मिले सन्त, उपजे ज्ञान ।।4।।
नाथ गुरु कहे, संभालो जीवन ।
गुरु बिना जीवन, व्यर्थ जान ।।5।।

भजन

जय जय नाथ शिव गोरक्षनाथ.....
जय जय नाथ शिव गोरक्षनाथ.....

(12)

काशी गया तीर्थे, भ्रमन से क्या अर्थ।
चित्त मे ना नाम, सब ही व्यर्थ ।।1।।
नाथ नाम विन्मुख, नर पापी भया।
गुरु गृही बिना, कैसे पावन काया ।।2।।
पुराण प्रसिद्ध, कहते संत जन।
उद्धार तिन लोक, जाता शरण ।।3।।
नाथ गुरु कहे, परम्परा कुला कुल।
जपो ऐसो नाम, भये, वो निर्मल ।।4।।

(13)

नाम उच्चारण, अनंत गुण दोष ।
होंगे वही भस्म, क्षणमात्र ।।1।।
गंगा मिले सागर, भयी समरस ।
लेलो नामगोरक्ष, सुधा रस ।।2।।
शिव गोरक्ष योगी, मंत्र वो अगाध।
लेने से तर गये, नीच कोटि व्याध ।।3।।
नाथ कहे नाम, गोरक्ष समर्थ ।
ना करो अर्थ, उपनिषदे ।।4।।

(14)

व्रत जप तप, भाव बिनु सिद्धि ।
करे उत पात, नर वो उपाधि ।। 1।।
भाव बिनु जाना, भक्ति का वो अर्थ ।
गुरु मिले सांचा, भये समर्थ ।। 2।।
आसन वासन, अन्तर मन वास ।
रत्न मिले यत्न, साधना हो प्यास ।। 3।।
नाथ शक्ति पात, सम्पूर्ण ही ज्ञान ।
कृपा आनन्द नाथ, यही प्रमाण ।।4।।

(15)

समाधी साधन, आनंदी आनन्द ।
सर्व भ्रम मिटे, परमोउचा नन्द ।।1।।
आत्म ज्ञान वैभव, और दूजे नाही ।
भये दर्शन नाथ, सकल सिद्धि ।।2।।
ऋद्धि सिद्धि चमत्कार, सकल उपाध।
आत्मा–परमानन्द, मन को ही साध ।।3।।
नाम सर्व रम्य, रमी समाधान ।
सतगुरु लेता, नाम सर्वकाल ।।4।।

(16)

नित्य प्रातः जपो, नाथ सिद्ध पाठ ।
कलि काल तित, ना आये पास ।।1।।
शिव गोरक्ष योगी, नित्य मन्त्र जाप।
आगे–आगे नाथ, पीछे छूटे पाप ।।2।।
"शिव गोरक्ष योगी", मन्त्र से कल्याण ।
मुखी नाम सदा, मोक्ष मुक्ति जाण ।।3।।
नाथ सिद्ध कहे, गुरु गोरक्ष नाम।
पाये उत्तम नर, निज स्थान ।।4।।

(17)

नाथ एक नाम, द्वैत नाम दूरी।
अद्वैत के ज्ञान, विरला ही जाने ।।1।।
नाथ शक्ति–भक्ति, सम्पूर्ण व्यापक।
शम दम दण्ड, नाथ ही जाने ।।2।।
घट–घट गोरक्ष, नाम एक वास ।
चन्द्र सूर्य रश्मी, अनंत प्रकाश ।।3।।
नाथ देवा चित्त, नाथ पाठ नेम ।
मोक्ष मुक्ति फल, भये वो तत्काल ।।4।।

(18)

नाथ पाठ जपो, नर वो दुर्लभ ।
सरल है वाचा, गुरु गोरक्ष लाभ ।।1।।
शिव गोरक्ष नाम, साधन उन्मनी ।
शुभ–लाभ सर्व, सकल ही सिद्धि ।।2।।
सिद्धि बुद्धि धर्म, नाथ सिद्ध पाठ ।
प्रपंच निवृत्ति, संत संगे गाठ ।।3।।
नाथ सिद्ध कहे, गोरक्ष ही नाम ।
सर्व दिशा देखो, आत्माराम ।।4।।

(19)

नाथ सिद्ध पाठ, कीर्ति मुखी गाया।
सर्वत्र पवित्र, देह उनका भया ।।1।।
जप तप सामर्थ्य, भया वो अनूप ।
संजीवन ये मन्त्र, शिव स्व स्वरुप ।।2।।
माता पिता भ्राता, संगोत्र अपार ।
चर्तुभुज नर, सर्वत्र संसार ।।3।।
गूढ़ ज्ञान गम्य, नाथ देवा साध ।
सद् गुरु कृपा, भयी अगाध ।।4।।

(20)

गोरक्ष संकीर्तन, नाथ श्री पुराण ।
गुरु बिना कैसे, तित पहचान ।।1।।
सकल तीर्थ यात्रा, व्यर्थ तिर्थाटन ।
धाम शिवानन्द, नाम से गमन ।।2।।
खड़े वही सिद्ध, बैठे वो पाषाण।
करे नाथ सिद्ध पाठ, वही धन्य ।।37।।
नाथ कहे सिद्धों, बाणी अति सरल।
घटे पिण्डे गोरक्ष, रमी सकल ।।4।।

(21)

नाम संकीर्तन, गुरु गोरख बानी।
जाने जोई कोई, सिद्ध कर जानी ।।1।।
अनंत ही जन्मी, जप तप नाम।
नाथ सिद्ध पाठ, मार्ग यह सुगम ।।2।।
योग याग क्रिया, धर्मार्थ की माया।
करे नाथ सिद्ध पाठ, भस्मी भया ।।3।।
नाथ गुरु कहे, धूनी पानी पूजा ।
बिना गुरु नियम, और नही दूजा ।।4।।

भजन

जय श्री नाथ गोरक्षाय.....जय जय नाथ गोरक्षाय.....जय

(22)

वेद शास्त्र पुराण, श्रुती के वचन।
शिव गोरक्ष नाम, सर्वसार ज्ञान ।।1।।
जप तप कर्म, बिना गुरु धर्म ।
मन मुखी श्रम, व्यर्थ जान ।।2।।
काम भोग भोज, करे नर एकान्ती।
पर नाथ एक पाठ, अगम्य शान्ति ।।3।।
नाथ सिद्ध कहे, जड़ जीव तारण।
श्री नाथ ऐसा पाठ, सर्व दोष हरण ।।4।।

(23)

शिव गोरक्ष नाम, जिह्वा सदा उच्चार।
पक्ष अपक्ष दोनों, भया उद्धार ।।1।।
शिव गोरक्ष मन्त्र, नाथ पन्थ शस्त्र ।
भये राज योगी, विजय सर्वत्र ।।2।।
नित्य प्रातः पाठ, गुरु मन्त्र जाप।
भये मन उनमन, मिटे सर्व ताप।।3।।
नाथ नाथ पुकार, गोरक्ष ही नाम।
लाभान्तीत नर, वायु लोक धाम ।।4।।

(24)

नित्य नेम नाम, प्राणी वो दुर्लभ।
जहां गोरक्ष वास, वही शुभ लाभ ।।1।।
शिव गोरक्षाय, शिव गोरक्षाय ।
मुक्ति भुक्ति युक्ति, अनायास ।।2।।
यम लोकी नर, भये मेहमान ।
नाथ बिनु जन्म, नरक समान ।।3।।
नाथ कहे ऐसा, भव्य गोरख नाम ।
अनंत कोटी ब्रह्मांड, सचराचर ।।4।।

(25)

गोरख उत्तम नाम, ऐसो सर्व सार ।
कष्ट बिनु लेलो, आत्म–साक्षात्कार ।।1।।
षोडस दर्शन, दश इन्द्रि क्षेम ।
आत्म होत दर्शन, सर्व एक ब्रह्म ।।2।।
जपा अजपा, उलट भया प्राण ।
प्राणी प्राण चित्त, निर्धारी मन ।।3।।
नाथ कहे नाम, बिनु व्यर्थ जीवन ।
बारह पंथी नाथ, भये उद्धारन ।।4।।

(26)

जप तप कर्म, क्रिया नेम धर्म ।
सर्व घट नाम, भये भाव शुद्ध ।।1।।
छोड़ो नाही भाव, छोड़ दो सन्देहा ।
गोरक्ष–गोरक्ष नाम, अमर देहा ।।2।।
कुल–अकुल शील, जात पात गोत्र।
भजो भज मन, भावातीत गात्र ।।3।।
नाथ देवा ध्यान, श्री गोरक्ष नाम।
निरन्तर वास, अलख क्षेत्र धाम ।।4।।

भजन

जय जय नाथ गोरख जती.....जय जय नाथ गोरक्ष जती.....जय जय.....

(27)

अगम–निगम, नाथ घर नाही।
नाम उच्चारण, मोक्ष मुक्ति यही ।।1।।
नाम संकीर्तन, शिव गोरक्ष मन्त्र ।
कलियुगी काल, नही चले तन्त्र ।।2।।
साधु सन्त जन, दर्शन प्रमाण ।
जड़ जीव नर, कैसे तित जान ।।3।।

नाथ पाठ फल, आत्मा के दर्शन ।
जीव भये शिव, सिद्धों के प्रमाण ।।4।।

(28)

एक तत्व नाम, दृढ़ करो मन।
कृपावन्त नाथ, पावन भक्तजन ।।1।।
जती गोरक्षनाथ, नाम ये सुलभ ।
सद्गती सानन्द, लाभ ही लाभ ।।2।।
नाथ नामा परे, और तत्व नही ।
गुरु दिक्षा यही, सर्व काज सही ।।3।।
मौन जाप माला, कहे नाथ देवा ।
हरि हर मेला, दुर्लभ मेवा ।।4।।

(29)

आलस कामी निन्द्रा, संसारीका अटका।
सदाचारी दीठा, नाम सुख मीठा ।।1।।
माया मोह ममता, संसार सागर ।
नाथ कहे नाम, बाकी सब असार ।।2।।
नाम मन्त्र जाप, कोटी पाप मारे।
नाम संकीर्तन, अनाथ को तारे ।।3।

नाथ संत कहे, आनन्द प्रमाण।
आत्मरमी ज्ञान, समाधी साधन ।।4।।

(30)

निज वृत्ती काटो, सर्व माया तोड़ो ।
इन्द्रिय सुख, छुपाये कैसे ।।1।।
व्रत तीर्थ भाव, करुणा धारण ।
दया क्षमा शान्ति, धन्य वो जीवन ।।2।।
नाथ सिद्ध योग, सरल साधन ।
सुमार्ग प्रालब्ध, सावचित्त ध्यान ।।3।।
शिव गोरक्ष नाम, ज्ञान चक्षु अटल ।
महामन्त्र ज्ञानी, सर्वत्र सकल ।।4।।

(31)

प्रयाण प्रयास, व्यर्थ बनखण्डी वास ।
सुख समृद्धि गृही, आये नाथ ।।1।।
बैठो एकासन, जाप एक चित्त ।
सहृदय ध्यान, भये साव चित्त ।।2।।
"ॐ शिव गोरक्ष", मन्त्र नाथ सिद्ध ।
नित्य जपो जाप, सर्वकाल ।।3।।
नाथ गुरु कहे, सीधे साधे नाम ।
प्रत्यक्ष ही शिव, गोरक्ष ही जान ।।4।।

(32)

जती गोरक्षाय, जती गोरक्षाय ।
भये आत्मज्ञान, तरणो उपाय ।।1।।
क्षण मात्र एक, खड़े नाथ द्वार ।
मोक्ष मुक्ति साधे, जीव उद्धार ।।2।।
सर्व घटी ज्योति, अक्षय गोरक्ष ।
जागे अन्तर मन, प्रमाण प्रत्यक्ष ।।3।।
सतगुरु प्रसादे, प्रपंच प्रवास ।
रहो निरन्तर, हृदय निवास ।।4।।
कहे नाथ विलास, कृपा आनन्द नाथ।
आगे–आगे जागे, गुरु गोरखनाथ ।।5।।

भजन

योगेश्वर नाथ जी महाराज गोरक्ष नाथ.....
योगेश्वर नाथ जी महाराज गोरक्ष नाथ.....

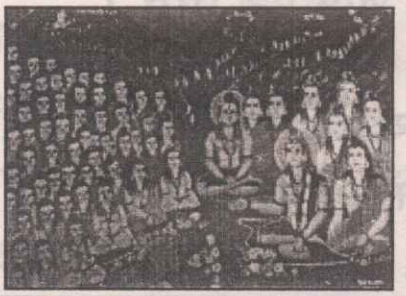

(नित्य पाठ)

श्री नाथ सिद्धों की गुरु-शिष्य परम्परा

गुरु वन्दना

॥ ॐ ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरु र्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवै नमः॥
ध्यान मूलं गुरुमूर्तिः, पूजा मूलं गुरौरपदम्।
मन्त्र मूलं गुरुः वाक्य, मोक्ष मूलं गुरु कृपा॥
मन्त्र सत्यं पूजा सत्य, सत्यदेव निरन्जनम।
गुरुःवाक्यं सदा सत्यं, सत्यम एक परंपदम॥

(1)

सत्य सनातन, परम ईश्वर।
सत् गुरु नाथ, आनन्द सागर ॥1॥
पामर हम, पुष्प मकरन्दा ।
राखो भाव, भक्ति सानन्दा ॥2॥
कृपा मस्तकी, कर ही राखो ।
स्नेहल मातृ, स्वरुपी लाखो ॥3॥
धर्म कर्म, योग पुरुषार्थ ।
पितृ स्वरुपी, करो कृतार्थ ॥4॥

(2)

जड़ अज्ञान, हम जीवात्मा ।
ज्ञान चक्षु, प्रगटावो परमात्मा ।।1।।
हृदय तत्, सीने से लगाया ।
अन्तर आत्मा, प्रमाण दिखाया ।।2।।
नाम दिया जो, मंत्र अगाध ।
शिव गोरक्ष योगी, शबद सिद्ध ।।3।।
भेद योग, चैतन्य दिखलाया ।
माया भोग, वैराग्य दिलवाया ।।4।।

(3)

शुद्ध भाद्रपदी, शुक्ल पक्षी।
मंगल द्वादशी, मंगल दिन साक्षी ।।1।।
देख मनका, शुद्ध भाव।
दीनी दिक्षा, किया स्वीकार ।।2।।
दीना मन्त्र, अपरम्पार ।
भव सागर से, किया पार ।।3।।
कहे सतगुरु, यह सन्त जीवन ।
गुरु शिष्य, परमात्म मिलन ।।4।।

(4)

अगम से आया, निगम को जाना ।
सत्य कहकर, सत्य को पाना ।।1।।
शबद सतगुरु, सूरति चेला ।
पीलो अमिरस, सन्तजन मेला ।।2।।
सत्य सतगुरु, सहज ही पाये।
परब्रह्म का, भेद बताये ।।3।।
सन्त संगति, सदगुरु तारु ।
सतगुरु मेरो, कृपा सागरु ।।4।।

(5)

सौंप दिया जब, जीवन का भार ।
निश्चिन्त किया, जीवन का सार ।।1।।
हाथ मस्तकी, रख दिया ममता ।
और कह दिया, छोड़ दे चिन्ता ।।2।।
नाद जनेऊ, गल नाद मुन्द्रा ।
भेष भगवा, सतगुरु दीन्हा ।।3।।
तुम कारण हम, भये अनन्ता ।
लाज राखो, बहु विध सन्ता ।।4।।

भजन

अलख निरन्जन, सतगुरु साजै ।
तहां विश्वम्भर , आप विराजै ।।

नवनाथ प्रणाली

(6)

आदिनाथ गुरु, सकल सिद्धों का।
नाथ सिद्ध, गुरु शिष्य, परम–तत्व का ।।1।।
आदिनाथ सोचे, नाथ परम्परा।
प्रगट करु, समुचि सर्व, जगउद्धरा ।।2।।
सत्य युगों के, प्रथम चरण में ।
भये प्रगट, त्रिगुण त्रिकाल, नाथ शक्ति में ।।3।।
किया प्रगट तित , महा अग्नि स्तंभ ।
ब्रह्मा विष्णु, देख भये, बड़े अचम्भ ।।4।।

(7)

आदिनाथ बड़े, दीन दयालु ।
ब्रह्मा विष्णु, देव पर, भये कृपालु ।।1।।
भगवान विष्णुजी, तेज स्वरुपी ।
नाथ सन्तोष, नाम दिया, सत्य स्वरुपी ।।2।।
सत्य नाथ ब्रह्मा, जल स्वरुपी ।
चारों वेद, शास्त्र पुराण, ज्ञान स्वरुपी ।।3।।
कहे आदिनाथ, होगे तुम सिद्ध ।
पूजे जावोगे, जुग जुग में, नाथ प्रसिद्ध ।।4।।

(8)

हिम नगरी में, कैलाश धाम।
आदि शक्ति, प्रातः प्रसंगे, उत्तम स्नान ।।1।।
उटि सिन्दूरी, सुपुत्र बनवायो ।
दीना अंकुश, द्वारपाल में, रक्षक बनवायो ।।2।।
बनखण्डी से, उमानाथ आये।
कहे द्वारपाल, आदिनाथ को, अन्दर ना जाये ।।3।।
तब युद्ध प्रसंगे, क्रुद्ध महेश ।
मारा अंकुश, काट दियो वह, पुत्र के शीश ।।4।।

(9)

कहे पार्वती, पुत्र क्यु मारीयाँ ।
तब शिव शंकर ने, पार्वती को, उपाय बतलाया ।।1।।
गज हस्ती के, शीश ले आवो ।
मंत्र संजीवन, फूंक मारे, पुत्र बनवायो ।।2।।
नाम दिया उनको,गज कन्थड़ नाथ ।
किया पुत्र को, दीक्षा देकर, गजबेली नाथ ।।3।।
दिया वरदान, तुम होगे, सिद्ध ।
कलियुग में, ऋद्धि सिद्धि, नव निधि के साथ ।।4।।

(10)

एक बारगी, समुद्र मन्थन।
शिव ने किया, हलाहल, जहर प्राशन ।।1।।
तब काया अग्नि में, दाह हला हल ।
चन्द्र–शेष को, धारे मस्तक, हो गये शीतल ।।2।।
प्रसन्न होकर, दिया वरदान ।
होगे तुम दोनों, युग युग में, नाथ सुजान ।।3।।
भये शेषजी, अचम्भे नाथ ।
बने चन्द्रजी, वनस्पति स्वरुपी, चौरंगी नाथ ।।4।।

(11)

एक बार शक्ति, कहे उमानाथ ।
हे नाथ जी, देना हमको, गृहयत्म ज्ञान ।।1।।
आदि नाथजी, दिव्य ॐकार ।
ले गये शक्ति, निर्जन स्थान, समुन्दर पार ।।2।।
अब यहां पार्वती, भई सनाथ ।
मिले उत्तम, महाज्ञान, भयी उदयनाथ ।।3।।
जब उदयनाथ जी, निन्द्रा आधीन ।
समुन्दर से, आये हुंकार, ज्ञान सुजान ।।4।।

(12)

आदिनाथ खोजे, कौन हुंकार ।
तब मत्स्य गर्भ में, सुन रहे थे, बाल मछिन्दर ।।2।।
माया मछिन्दर, योग माया सिद्ध ।
नाथ पंथ के, तीन लोक में, भये प्रसिद्ध ।।2।।
करके तपस्या, कहे मछिन्दर ।
ले लो भगवंत, शिष्य रुप में, द्विव्य अवतार ।।3।।
आदि नाथ ने , दिया विचार ।
महा ज्ञान, योग कारण, लूंगा अवतार ।।4।।

(13)

हिमालया में, अलख निरन्जन ।
वायु लोक में, बैठे आसन, ज्ञान भन्जन ।।1।।
वायु लोक के, अलख क्षेत्र ।
खुले ज्ञान के, आदिनाथ के, तृतीय नेत्र ।।2।।
तब आप स्वरुप, स्वयंम–स्वरुपी ।
अन्त:करण, प्रेम हृदय से, प्रगटायी ज्योति ।।3।।
ज्योत में अब जन्मे, सुन्दर बालक ।
नाथ गोरख, नाम धारे, स्वयं आदिनाथ ।4।।

(14)

जती गोरखनाथ, ज्योति स्वरुपी ।
कर्ण कुण्डल, नाद जनेऊ, महाज्ञान रुपी ।।1।।
नाथ पंथ में, गोरक्ष अवतार ।
ज्ञान ध्यान में, भये प्रसिद्ध, योग चमत्कार ।।2।।
कहे नाथ गुरु, जती गोरक्ष बाला ।
साधु–संत में, कोई नहीं है, इनसे ही बिरला ।।3।।
नवनाथों में नाथ, नाथ श्री गोरक्ष ।
देवी देवता, सुरनर, वीर, तीन लोक साक्ष ।।4।।

(15)

ऐसे नाथ नवनाथ, भयो प्रमाण ।
योग ध्यान, ज्ञान रंजन, नाथ निरंजन ।।1।।
युगों युगों से, योग प्रचार ।
नाथ सिद्धों ने, बहुत दिया, ज्ञान प्रसाद ।।2।।
नवनाथ में प्रगटे, चौरासी सिद्ध ।
ज्ञान ध्यान और, योग याग में, जग प्रसिद्ध ।।3।।
नाथ कहे गुरु, शिष्य प्रणाली ।
नाथ सिद्ध ने, नाथ पंथ में, सिद्ध कर जाली ।।4।।

भजन

जय जय नाथ निरन्जन.....जय जय नाथ नवनाथ.

.....जय जय नाथ निरन्जन.....

चौरासी सिद्धों की नाथ प्रणाली

(16)

गंगा गोदा, अनुपान शिला ।
सुमिरु बैठे, गोरख बाला ।।1।।
त्र्यम्बक क्षेत्र, कुम्भ कि बेला ।
ऋद्ध सिद्ध, सिद्धों का मेला ।।2।।
बैठे चौरासी, और नवनाथ ।
बीच सभा के, गोरख नाथ ।।3।।
नाथ कहे, अब सुनो जी सिद्ध ।
सन्त पथ में, चौरासी सिद्ध ।।4।।

(17)

ॐकार आदिनाथ के, अनुपम शिष्य ।
प्रथम उदयनाथ, पार्वती सिद्ध ।।1।।
माया मछन्दर, जलन्धर शिष्य ।
इनकी माया, जग में प्रसिद्ध ।।2।।

सनक सनातन, सनन्द शिष्य ।
वेद शास्त्र का, किया था भाष्य ।।3।।
मारकण्डे नाथजी, सनत्कुमार ।
इनको नतमस्तक, बारम्बार ।।4।।

(18)

मीन नाथ जी, सिद्ध विरुपाक्ष ।
त्याग बैराग, प्रमाण प्रत्यक्ष ।।1।।
सत्यनाथ जी, शिव मानस पुत्र ।
याज्ञवालक्य उनके, प्रियतम शिष्य ।।2।।
अचल अचम्भे, जती शेष अवतार ।
सन्तोषनाथ जी, शेष शय्या पर ।।3।।
नाथ कहे यह, सिद्धों की टोली ।
ऋद्धि सिद्धि, नव निधि की झोली ।।4।।

(19)

जलन्धर नाथ के, उत्तम शिष्य ।
टिण्टीणी, शृंगेरी, गोपीचन्द सिद्ध ।।1।।
कानिफा उत्पती, गज कन्थड़ नाथ ।
रीत चले नाथ, पंथ के साथ ।।2।।
अजर अमर है, वज्र हो काया ।
योग मिटे ना, लिपै माया ।।3।।
नाथ कहे जो, सुनरे अवधु ।
मछिन्द्र नाथ के, शिष्य सबदु ।।4।।

(20)

माया मछिन्द्र के, गोरख शिष्य ।
ॐ कार आदिनाथ के, स्वयं अवतार ।।1।।
मन्जु तारा, शाबर सिद्ध ।
तंत्र मंत्र और, अघोर सिद्ध ।।2।।
काल नाथ जी, सिद्धासन सिद्ध ।
महा अघोरी, कपाल सिद्ध ।।3।।
नारदा शारदा, प्रभुदेव सिद्ध ।
गुरु भक्ती में, मंत्र मुग्ध ।।4।।

(21)

सत गुरु गौरव, मेरु शिष्य ।
मछिन्द्र नाती, मनोभाव शुद्ध ।।1।।
ऐसे मछिन्द्र, शिष्य प्रणाली ।
जन मन रन्जन, सब जग भाली ।।2।।
योग युक्ति ये, सान्धे काया ।
काल लगे ना, लीपै माया ।।3।।
कहे नाथ जी, गुरु गोरख योगी ।
देखो शिष्य जो, अमिरस भोगी ।।4।।

(22)

गुरु गोरख तो, सबसे विरले ।
अपने गुरु, आपही चेले ।।1।।
कनक, भुसक, नाथ सहजाई ।
आई पंथ की, प्रथा चलाई ।।2।।
ब्रह्माई, नरमाई, सिद्ध लधाई ।
नागों के नाथ, रीत चलाई ।।3।।
श्रृताई भगाई, नाथ मनसाई ।
गोरखनाथ से, भये वरदाई ।।4।।

(23)

मस्तनाथ तो, गोरख अवतारा ।
तीन लोक के, भये करतारा ।।1।।
सुरत निरत थे, घोड़ा चोलिपा ।
ध्यान तपस्या, तन को तापा ।।2।।
आई पंथ के, सारस्वताईनाथ ।
वाम पंथ पर, की थी मात ।।3।।
खेचर भुचर, नाथ धुन्धुकारा ।
जल थल पवन में, बहु चमत्कारा ।।4।।

(24)

बिरबंक और , सिद्ध हवाई ।
पवन हारी थे, बड़े बलदाई ।।1।।
कपिल मुनी के, चन्द्रनाथ शिष्य ।
सांख्य शास्त्र में, ज्ञान प्रसिद्ध ।।2।।
चर्पटीनाथ के, शिष्य बिलेषाय ।
राजवैद्य थे, आयुर्वेदाचार्य ।।3।।
नाथ कहे यह, पंथ के योगी ।
जन मन रंजन, रमते जोगी ।।4।।

(25)

राजा भर्तृहरि, नाथ गोपीचन्द ।
अमर काया, भव अभयानन्द ।।1।।
नाथ बालक, और प्रकाश सिद्ध ।
गोरनाथ सह, भये प्रसिद्ध ।।2।।
काया प्रौढ़, और सिद्ध गरीब ।।
त्याग वैराग्य में, अजीबो गरीब ।। 3।।
नाथ कहे यह , पंथ बैराग ।
नाथ सिद्धों में, भया अनुराग ।।4।।

(26)

लंका राज्य के, लंकानाथ ।
राम बाण से, मुक्ति पात ।।1।।
इनके शिष्य थे, गेहल्ला रावल ।
जग जन मन में, की थी खलबल ।।2।।
भद्र, मद्र थे, रावल पंथी ।
शिव शक्ति में, करे थे भक्ति ।।3।।
नाथ कहे यह, लंकनाथजी।
त्रेता युग में, चली कहानी ।।4।।

(27)

नाम लक्ष्मण, के बालगुन्दाई ।
पंथ नटेश्वरी, रीत चलाई ।।1।।
चक्र वक्र, सिद्ध वीर नाथ ।
पंथ नटेश्वरी, भगवा भेष ।।2।।
दया दरीया, दरीयायी पंथ ।
सिद्ध बुद्धादी, महान सन्त ।।3।।
नाथ कहे यह, पंथ के जोगी ।
दरीया नटेश्वरी, समरस भोगी ।।4।।

(28)

सिद्ध रतन जी, बहु अनमोल ।
काबुल कन्धार, की खल बल ।।1।।
नाथ कोरण्ट जी, इनके शिष्य ।
पीर फकीरी के, बड़े थे सिद्ध ।।2।।
अल्लम मल्लम, धीर नाथ सिद्ध।
सूफी पंथ में, थे अनुरुद्ध ।।3।।
नाथ कहे यह, पश्चिम मण्डल ।
भ्रम मेटे और, भ्रमे भ्रू मण्डल ।।4।।

भजन

आगे आगे गोरख जागे...पाछे पाछे पाप ही भागे ।।

(29)

नाथ अड़बंग, तो सबसे न्यारे ।
उलटी बानी, गुरु गोरख प्यारे ।।1।।
सिद्ध पाद के, गुरु निरन्जन ।
नाथ सिद्ध थे, भव दुःख भन्जन ।।2।।
जम्भनाथ जी और धर्म नाथजी ।
धर्म शास्त्र और वेद पाठा दी ।।3।।
कहे नाथ श्री, मंगल बानी ।
जगी वंद्य और जनमन मानी ।।4।।

(30)

मल्लिक नागा, नागार्जुन सिद्ध ।
अलख निरन्जन, औघड़ सिद्ध ।।1।।
पिप्पल नाथ और सुरानन्द ।
हरी भक्त वो, नाथ सनातन ।।2।।
राम भक्त वो, काक भुशण्डी ।
नाथ चौरंगी से, दीक्षा लीनी ।।3।।
राम पंथ के, सुखदेव नाथ ।
कथा भागवत, ज्ञान के साथ ।।4।।
नाथ कहे वो, राजा परीक्षित ।
मुक्त किया वो, नाथ श्री लक्षीत ।।5।।

(31)

ज्ञान, निवृत्ति, गहनी नाथ ।
ज्ञान गोरख, इनके साथ ।।1।।
माणिक गोपाल, साहिरोबा सन्त ।
किया वारकरी, सनाथ पंथ ।।2।।
देवनाथ एकनाथ, और भी संत ।
वारकरी पंथ में, भये प्रसिद्ध ।।3।।
पंथ वारकरी, जन मन रंजन ।
हरि हर दोनों, अलख निरन्जन ।।4।।
नाथ कहे ओ, सन्त संगती ।
जीव शिव में, उत्तम गती ।।5।।

(32)

ऐसे नवनाथ, चौरासी सिद्ध।
अनन्त कोटी, हुये जो सिद्ध ।।1।।
नाथ शक्ति और ज्ञान के योगी ।
भाव भक्ति में, तपी अनुरागी ।।2।।
योग ध्यान और समाधी साधन ।
ज्योति बिन्द, आत्म निधान ।।3।।
तंत्र मंत्र और शक्ति साधन ।
पाप ताप का, किया निवारण ।।4।।
भूत प्रेता दी, घोर कलीकाल ।
करते रक्षा, सदा सर्व काल ।।5।।
नाथ कहे यह, पाठ साधन ।
होगे नर नारी, अलख निरन्जन ।।6।।

भजन

जय जय नाथ गोरक्ष जती .....
जय जय नाथ गोरक्ष जती.....

बारह पंथों की परम्परा

(33)

कहे नाथ गुरु, बारह पंथ ।
तीन लोक में, भये व्यापक, नाथ सिद्ध सन्त ।।1।।

नाथ परम्परा, अपना ही धर्म।
जिसमें उनके, नाथ कुल की, रीत हुयी मर्म।।2।।
अपने अपने स्थान, पंथ विराजे ।
नाथ सिद्धों ने, जप तप से, खूब सजाये ।।3।।
कहे नाथ गुरु, यह पंथ पुरातन ।
चार युग से, चली परंपरा, सिद्ध सनातन ।।4।।

(34)

सत नाथ ब्रह्मा, शिव के योगी ।
भुवनेश्वर में, थापना थापी, कर्म काण्ड भोगी।।1।।
परशु राम तो, राम के जोगी ।
नेपाल नोहर, थापना थापी, रोट भण्डार भोगी ।।2।।
पागल पंथ सन्त, चौरंगी योगी ।
रोहताश में, स्थापना थापी, पर अस्थल बोहरमानी ।।3।।
पाव पंथ के, जालंधर जोगी ।
गठ जलोर में, स्थापना थापी, नाम रस भोगी।।4।।

(35)

राज युधिष्ठिर, धरम के पंथ।
दुल्लु देवल, स्थापना थापी, कारबारी सन्त ।।1।।
कहे नाथ जी, नाथ सिद्ध ने जानी ।
गोरखपुर में, नाथ सिद्ध ने,मथ्या टेक मानी ।।2।।
शंके बंश के, पंथ मन्नाथी ।
टाईया पीठ में, थापना थापी, रमते राम जोगी।।3।।
गोरख बन्सी में, पंथ कपलानी ।
पीर पंथ थे, सिद्ध कपिल जी, धीर वीर मुनी।।4।।

(36)

हर हर गंगे, पंथ गंगनाथी ।
गुरदासपुर, थापना थापी, गंगासागर मानी ।।1।।
पंथ नटेश्वरी, लक्ष्मण के योगी ।
गोरख टिल्ला, थापना थापी, राज काज भोगी ।।2।।
पंथ आई के, बिमला माँ सिद्ध ।
बंग देश में, बिमला गुफा, स्थान प्रसिद्ध ।।3।।
पंथ बैराग, भर्तृहरि योगी ।
राता डुंडा, थापना थापी, पीर पंथ जोगी ।।4।।

(37)

रावल पंथ की, सिद्ध परणाली ।
बार दरबार, थापना थापी, पांच पंच जानी ।।1।।
और पंथ थे, नाथ दरबारी ।
बन, कन्थड़, गैनी चर्पट, और वार करी ।।2।
और पंथ पायल, ध्वज तारक नाथी ।
तंत्र मंत्र, जादू टोना, निरन्जन पंथी ।।3।।
अठारह बारह के, यह हटयोगी ।
शिव गोरख, शिव गोरख, नाम रस भोगी ।।4।।

भजन

अलख निरन्जन अलख निरन्जन.....
भव दुःख भन्जन, भव दुःख भन्जन.....

पंथ आई की परम्परा

(38)

नाथ कहे सुनो आई पंथ ।
सर्व श्रेष्ठ वो, सकल सिद्धान्त ।।1।।
पंथ आई के, गुरु परम्परा ।
चली आई, अपरमपारा ।।2।।
देवराज की, कन्या बिमला ।
किया तपस्या, पावन बेला ।।3।।
प्रसन्न होकर, गोरख नाथा ।
वरदान मिल जो, बिमल नाथा ।।4।।

(39)

कहे नाथजी, सुन बिमला माई।
तुम्हरे नाम से, पंथ आई ।।1।।
चलता रहेगा, पंथ प्रवाह ।
नाथ सिद्ध में, पंथ प्रचार ।।2।।
नाथ कनकाई और भुसकाई।
दिये थे चेले, बड़े बलदाई ।।3।।
आगे आगे भये, बड़े सिद्ध ।
आई पंथ में, नाथ प्रसिद्ध ।।4।।

(40)

फिर प्रगटे वह, नाथ लधाई।
और पंथ संवारा, नाथ सहजाई ।।1।।
नाथ खेचर और, छोड़ा चोली ।
बंगाल देश में, पंथ चलायी ।।2।।
सरस्वताई, बाल गुण्दाई ।
किया प्रचार, नाथ बढ़ाई ।।3।।
धुनी पाणी, सिद्धों की बानी ।
पंथ आई, सिद्ध कर जानी ।।4।।

(41)

श्रृताई भगाई, हरियाणा क्षेत्र।
नित्य निवासा, करे कुरुक्षेत्र ।।1।।
ब्रह्माई और, नरमाई नाथ ।
रमे खोत में, नागों के साथ ।।2।।
किया तपस्या, और चमत्कार ।
पंथ आई का, वंश प्रचार ।।3।।
नाथ कहे यह, आई पंथ ।
जन मन कल्याण, बहुविध सन्त ।।4।

(42)

बोहर नोहर, देश हरियाणा ।
देखो जहाँ भी, सिद्धों का थाना ।।1।।
बाबा मस्ताई के, रुप अवतार ।
प्रगटे गोरख, स्वयं योगेश्वर ।।2।।
परम पावन, अस्थल बोहर ।
किये मस्ताने, बहु चमत्कार ।।3।।
नाथ कहे यह, मठ जो एक ।
आई पंथ का, मथ्था टेक ।।4।।

(43)

अब गद्दी नसीम, पीर तोतानाथ ।
आगे मेघ–मेहेर, और चेतनाथ ।।1।।
ऐसे सिद्ध, भये बहुमोल ।
आई पंथ को, किया अनमोल ।।2।।
आगे चली, गुरु शिष्य प्रणाली ।
दिन दुगनी, रात चौगनी ।।3।।
नाथ कहे सुन, इनकी ख्याति ।
भया सम्प्रदाय बहु विध कीर्ति ।।4।।

(44)

जब पुरण और, श्रोयोनाथ जी ।
बैठे गद्दी मान, थाठ जी ।।1।।
कथा कथन, साहित्य विद्या ।
मठ मन्दिर द्वारे, प्रख्यात किया ।।2।।
सप्तम गद्दी, पीर चांदनाथ जी ।
इनकी माया, बहु अचरज की ।।3।।
प्रचार प्रसार, जग प्रसिद्धी ।
आई पंथ जो, नाथो की गद्दी ।।4।।

(45)

सतगुरु मेरे, आनन्द नाथ ।
महामंत्री जो, पंथ के साथ ।।1।।
उज्जवल कार्य, उज्जवल भविष्य ।
जिनको कोई, पार न पाय ।।2।।
इनकी कृपा और आशीर्वाद ।
किया कृतार्थ , प्रगट भेद ।।3।।
नाथ कहे मम, सतगुरु पाया ।
गद्य पद्य में, पूरण किया ।।4।।

श्री नाथ सम्प्रदा

9 नाथ

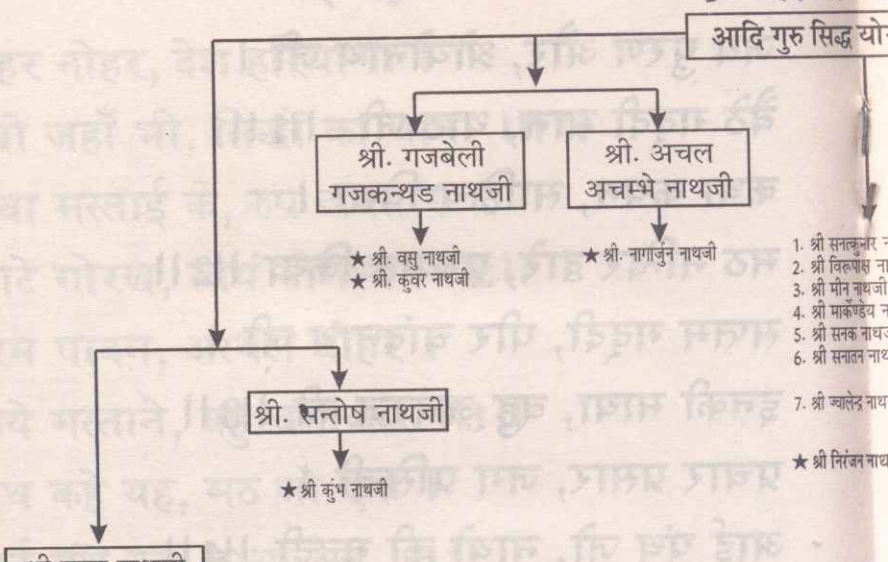

योगी सम्प्रदाय के बारह पंथ

	पंथ का नाम	उत्तरार्ध प्रर्वतक	स्थान
1.	सत्यनाथ	ब्रह्माजी	पाताल भुवनेश्वरी
2.	रामनाथी	विष्णुजी	धनौरी गद्दी
3.	पाकल	पाकल नाथजी	अस्थल बोहर (पुराना
4.	पावपंथ	जालंधर नाथजी	जालौर
5.	धर्मनाथ	धर्मराज युधिष्ठर	गोरखपुर
6.	माननाथी	राजा ऋशालु	जोधपुर
7.	कपलानी	कपिलमुनि	कलकत्ता
8.	गंगानाथी	भागीरथ नाथ	गंगासागर
9.	नटेश्वरी	लक्ष्मणजी	गोरख टिल्ला
10.	आई पंथ	बिमला देवी	अस्थल बोहर
11	बैराग	भर्तृहरि नाथ	राताडुण्डा
12.	रावल पंथी	रावल नाथ	गैलपुर
		और कुछ पंथ	
1.	कन्थड पंथ	गणेश नाथ	कन्थड कोट
2.	बन पंथ	बनखण्डीनाथ	मारवाड पाली
3.	ध्वज पंथ	बीरबंक नाथ	अम्बाला
4.	पंख	पंकनाथ	स्थानों में अखण्ड ध
5.	वारकरी	ज्ञाननाथ	पंढरपुर

मान चिन्ह

- ▭ = 9 नाथों के नाम
- गुरु ⟶ शिष्य
- 1, 2.....84=84 सिद्धों के नाम
- ★ = इतर सिद्धों के नाम

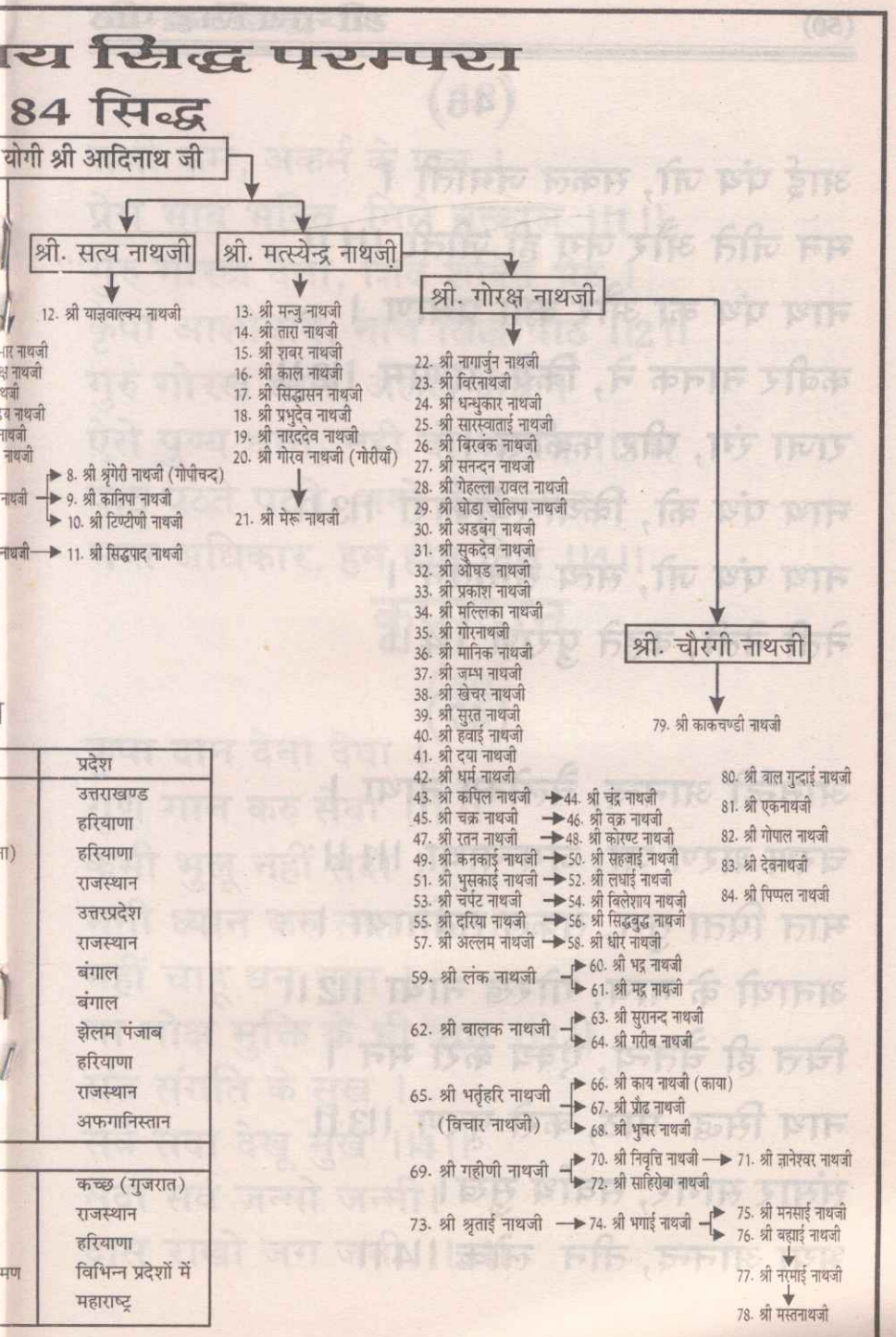
य सिद्ध परम्परा
84 सिद्ध
योगी श्री आदिनाथ जी
श्री. सत्य नाथजी
श्री. मत्स्येन्द्र नाथजी
श्री. गोरक्ष नाथजी
श्री. चौरंगी नाथजी
12. श्री याज्ञवाल्क्य नाथजी
13. श्री मन्जु नाथजी
14. श्री तारा नाथजी
15. श्री शबर नाथजी
16. श्री काल नाथजी
17. श्री सिद्धासन नाथजी
18. श्री प्रभुदेव नाथजी
19. श्री नारददेव नाथजी
20. श्री गोरव नाथजी (गोरीयाँ)
21. श्री मेरू नाथजी
22. श्री नागार्जुन नाथजी
23. श्री विरनाथजी
24. श्री धन्धुकार नाथजी
25. श्री सारस्वाताई नाथजी
26. श्री बिरवंक नाथजी
27. श्री सनन्दन नाथजी
28. श्री गेहल्ला रावल नाथजी
29. श्री घोडा चोलिपा नाथजी
30. श्री अडबंग नाथजी
31. श्री सुकदेव नाथजी
32. श्री ओघड नाथजी
33. श्री प्रकाश नाथजी
34. श्री मल्लिका नाथजी
35. श्री गोरनाथजी
36. श्री मानिक नाथजी
37. श्री जम्भ नाथजी
38. श्री खेचर नाथजी
39. श्री सुरत नाथजी
40. श्री हवाई नाथजी
41. श्री दया नाथजी
42. श्री धर्म नाथजी
43. श्री कपिल नाथजी → 44. श्री चंद्र नाथजी
45. श्री चक्र नाथजी → 46. श्री वक्र नाथजी
47. श्री रतन नाथजी → 48. श्री कोरण्ट नाथजी
49. श्री कनकाई नाथजी → 50. श्री सहजाई नाथजी
51. श्री भुसकाई नाथजी → 52. श्री लधाई नाथजी
53. श्री चर्पट नाथजी → 54. श्री विलेशाय नाथजी
55. श्री दरिया नाथजी → 56. श्री सिद्धबुद्ध नाथजी
57. श्री अल्लम नाथजी → 58. श्री धीर नाथजी
59. श्री लंक नाथजी → 60. श्री भद्र नाथजी, 61. श्री मद्र नाथजी
62. श्री बालक नाथजी → 63. श्री सुरानन्द नाथजी, 64. श्री गरीब नाथजी
65. श्री भर्तृहरि नाथजी (विचार नाथजी) → 66. श्री काय नाथजी (काया), 67. श्री प्रौढ नाथजी, 68. श्री भुचर नाथजी
69. श्री गहीणी नाथजी → 70. श्री निवृत्ति नाथजी → 71. श्री ज्ञानेश्वर नाथजी, 72. श्री साहिरोबा नाथजी
73. श्री श्रृताई नाथजी → 74. श्री भगाई नाथजी → 75. श्री मनसाई नाथजी, 76. श्री बहाई नाथजी → 77. श्री नरमाई नाथजी → 78. श्री मस्तनाथजी
79. श्री काकचण्डी नाथजी
80. श्री बाल गुन्दाई नाथजी
81. श्री एकनाथजी
82. श्री गोपाल नाथजी
83. श्री देवनाथजी
84. श्री पिप्पल नाथजी
8. श्री श्रृंगेरी नाथजी (गोपीचन्द)
9. श्री कानिपा नाथजी
10. श्री टिप्टीणी नाथजी
11. श्री सिद्धपाद नाथजी
प्रदेश
उत्तराखण्ड
हरियाणा
हरियाणा
राजस्थान
उत्तरप्रदेश
राजस्थान
बंगाल
बंगाल
झेलम पंजाब
हरियाणा
राजस्थान
अफगानिस्तान
कच्छ (गुजरात)
राजस्थान
हरियाणा
विभिन्न प्रदेशों में
महाराष्ट्र

(46)

आई पंथ जो, सकल जमाती ।
मन जीते और जग ही जीती ।।1।।
नाथ पंथ का और क्या प्रमाण ।
कबीर नानक ने, किये प्रणाम ।।2।।
राजा रंग, पीर फकीरा ।
नाथ पंथ को, किया स्वीकारा ।।3।।
नाथ पंथ जो, सत्य सनातन ।
नेती नेती, कहते पुराण ।।4।।

(47)

आनन्दी आनन्द, त्रैलोक्य नाथा ।
चरण शरण जो, जगन्नाथा ।।1।।
मात पिता तुम, सकल सर्वनाथा ।
अनाथो के नाथ, गोरख नाथा ।।2।।
चित्त ही चैतन्य, ऐक्य करो मन ।
नाथ सिद्ध पाठ, करो पूरण ।।3।।
संसार सागर, सर्वाथ सुख।
भया आनन्द, तीन लोक ।।4।।

(48)

सभी कर्म, अकर्म के फल ।
प्रेम भाव भक्ति, मिले तत्काल ।।1।।
गुरु गोरक्ष देना, शिव शक्ति भेट ।
कृपा आशीर्वाद, नाथ सिद्ध पाठ ।।2।।
गुरु गोरख धाम, अलख क्षेत्र ।
ऐसे पुण्य धाम, नही वो अन्यत्र ।।3।।
पाठ पठते पठते, भयो ऐसो ज्ञान ।
भया अधिकार, हम हीन दिन ।।4।।

कृपादान

(49)

कृपा दान देना देवा ।
गुण गान करु सेवा ।।1।।
कभी भुलू नहीं सदा ।
मनी ध्यान करु सदा ।।2।।
नहीं चाहू धन धान ।
ना मोक्ष मुक्ति के भी दान ।।3।।
संत संगति के सुख ।
सर्व सदा देखू मुख ।।4।।
सदा सर्व जन्मो जन्मी।
दास राखो जग जनी ।।5।।

(50)

करो क्षमा अपराध ।
तुम नाथ बड़े सिद्ध ।।1।।
नहीं जाने अधिकार ।
चरण शरण किंकर ।।2।।
नाथ कहे तुम ही सर्व ।
सभी करो निवारण ।।3।।

(51)

भयो भयो रे समाधान ।
देखते देखते चरण ।।1।।
तुम बिनु कृपा दान ।
मन कैसे उनमन ।।2।।
आवो आओ भगवाना।
करे पुकार भाव मना ।।3।।
ऐसा कैसा माया भोग ।
नाथ कहे करो निवारन ।।4।।

भजन

जय जय नाथ हरिहर.....
जय जय नाथ हरिहर.....

(52)

करुँ आरती तुम, अलख निर बानी ।
धन्य धन्य, आज दिन, सुन नाथ सिद्ध बानी ।।1।।
देखो देखो हो सिद्ध, भये भक्त भाग्यवन्त।
खड़े खड़े हो सन्मुख, देखो, सर्व पुण्यवन्त ।।2।।
करुँ प्रेम भाव भक्ति, गुरु गोरख गुण गाति।
सदा सर्व सत्य रुप, नित्य करुँ अवलोकन ।।3।।
भया आनन्द आनन्द, कहे नाथ भाव विलास।
ध्यान ज्ञान सन्त के साधन, नाथ कहे वो सन्त पावन ।।4।।

भजन

योगेश्वर नाथ जी योगराज श्री गोरखनाथ।

(नित्य पाठ)

नवनाथ सृष्टि का प्रादुर्भाव

श्लोक

ॐ कार ज्योति गोरक्षं, नित्य ध्यायन्ती योगिनः।
मुक्ति च मोक्षदां चैव गोरक्षाय नमो नमः ।।1।।
अनंत कोटी ब्रह्माण्ड, गोरक्ष सचराचरम।
दर्शनम् मुक्ति लाभ च, तस्मै श्री गोरक्षाय नमः।।2।।

(1)

एक बार यह, ब्रह्माण्ड सारे ।
घूम रहे सब, ग्रह और तारे ।।1।।
गोरख बन्सी, सुन्दर उपवनी ।
ध्यान में बैठे, कपिल मुनी ।।2।।
पूछे भेद तब, मात देवहुति ।
कैसे उपजे, सृष्टि जग जीती ।।3।।
बड़े ही प्रसन्न, हो कपिल मुनि ।
भेद बताये, नवनाथ कहानी ।।4।।

(2)

सुनो मातृ श्री, तन मन पावन।
नवनाथ प्रगटाये, सृष्टि कारण ।।1।।
प्रथम सर्व थे, निराकार ।
परम शुन्य और निर्विकार ।।2।।

तब उपजे, नाद ॐकार ।
आदिनाथ जी, रुप ॐकार ।।3।।
शुन्य देश में, आदिनाथ जी ।
सोचे मन में, उपजावु सृष्टि ।।4।।

(3)

तब उपजी, एक इच्छा शक्ति ।
मन संकल्प और निजा शक्ति ।।1।।
कहे नाथ जी, हे निजा शक्ति ।
तुम्हे है करना, नूतन सृष्टि ।।2।।
निजा शक्ति ने, तब किया संकल्प ।
पवन तत्व का, भया विकल्प ।।3।।
पवन तत्व तो, शिव ॐकारा ।
जिसने किया जो, जग विस्तारा ।।4।।

(4)

शिव जी सोचे, जग विस्तारा ।
कौन होगा वह, पालन हारा ।।1।।
ऐसे सोचकर , शंकर नाथ ।
विष्णु जी बुलाये, तेज के साथ ।।2।।
सन्तोष नाथ जो, विष्णु अवतार ।
साम दाम दण्ड, दिया अधिकार ।।3।।
किया संतोषनाथ जी, सोच विचार ।
कौन करेगा, सृष्टि प्रसार ।।4।।

(5)

सत्यनाथ जी तब, ब्रह्म अवतार ।
जल तत्व से, बने करतार ।।1।।
चार खाणी और चार बानी ।
सत्यनाथ ने, सृष्टि उपजानी ।।2।।
खेचर भूचर और निशाचर ।
ऐसी सृष्टी, बनी चराचर ।।3।।
सत्य शिव और सन्तोष नाथ ।
सोच में पड़ गये, तीनों साथ ।।4।।
इस सृष्टी, जीवन सहारा ।
कौन करेगा, जीव उजियारा ।।5।।

(6)

तब तीनों उपजे, त्रिगुन शक्ति ।
आद भवानी, आदि शक्ति ।।1।।
उदयनाथ पार्वती, धरती स्वरुपी ।
पंच तत्व मिल, बनी थी धरती ।।2।।
फिर भी सोचे, पृथ्वी प्रसारा ।
कौन होगा, स्थित सहारा ।।3।।
तब त्रिदेव ने, किया संकल्प ।
और उपाया, एक विकल्प ।।4।।

(7)

तब उपजाये, शेष भगवान ।
अनन्त शक्ति, अनन्त योजन ।।1।।
तब मिलकर, सब शक्ति साथ ।
नाम धरायो, अचम्भे नाथ ।।2।।
अपने अनन्त, शीश फणापर ।
धरती धरायी, अनन्त अपार ।।3।।
अचल अचम्भे, शेष अवतार ।
किया कार्य तो, पूरण पार ।।4।।

(8)

पशु पक्षी और नर ही नारी ।
सृष्टि बनी तब, सगुण विकारी ।।1।।
सगुण विचार, तब निर्धारा ।
कैसा होगा इस, सृष्टि सहारा ।।2।।
जैसे रोटी, कपड़ा मकान ।
कौन बनेगा, जीव निधान ।।3।।
तब शक्ति ने, उपाय सुझाया ।
उटी सिन्दूरी, गणेश उपजाया ।।4।।
नाम दिया, गज कन्थड़ नाथ ।
ऋद्धि सिद्धि, नव निधि के साथ ।।5।।

(9)

हरा भरा बन, उपवन सारा ।
सुरवर नर मुनी, किया भण्डारा ।।1।।
इतना सब कुछ, बना बनाया ।
पर उसमें ना कोई, रस बरसाया ।।2।।
ऐसे सुन्दर सृष्टि, नि रस धारा ।
रंग गंध बिनु, जीव निस्तारा ।।3।।
तब चन्द्र देव, ने लिया अवतारा ।
अठारह भार बनस्पति, रूप को धारा ।।4।।
रस रंग और गंध स्वरुपा ।
नाथ चौरंगी बने, स्वरुपा ।।5।।

(10)

ऐसी हरी भरी, सब सृष्टि सारी।
जीवन रस में, लगी थी प्यारी ।।1।।
फिर भी देखा, इस सृष्टि भोग ।
प्यार व्यार सब, नरनारी वियोग ।।2।।
तब सब के, किये बहु प्रयासा ।
फिर भी डूब गये, आशा निराशा ।।3।।
तब शिव शक्ति ने, खेल रचाया ।
किया आमंत्रित, योग की माया ।।4।।

(11)

जोग माया तो, बड़ी थी ठगणी ।
माया मछन्दर को , लाने को ठाणी ।।1।।
माया मछिन्द्र तब, भया अवतारा ।
नाथ सिद्ध में, बहु विस्तारा ।।2।।
गंध सुगंध की, भयी रसधारा ।
रंग रुप में, माया प्रसारा ।।3।।
सृष्टी भयी, पूरण महामाया ।
जैसे सुन्दर, दुल्हन सजाया ।।4।।

(12)

जलचर, बनचर, नर और नारी ।
ओत प्रोत, प्रेम से प्यारी ।।1।।
ऐसा सृष्टि में, भया संक्रमन ।
सब माया भोग में, भये रमण ।।2।।
पाप पुण्य का, परम पसारा ।
काया माया, सुख दुःख अपारा ।।3।।
कर्म धर्म के, भोग से भारी ।
लिपाय मान भयी, सृष्टि सारी ।।4।।

(13)

क्या सत्य और क्या असत्य ।
भूल गये सब, परम सत्य ।।1।।
क्या ज्ञान और क्या अज्ञान ।
सुख दुःख में, सब थे परेशान ।।2।।
द्वैत और अद्वैत का द्वन्द ।
माया मोह में, सब थे धुन्द ।।3।।
नाथ कहे यह, संसार सागर ।
कैसा होगा, भव सागर पार ।।4।।

(14)

तब मूल प्रकृति, मूल तत्व ।
सोच में पड़ गये, परम तत्व ।।1।।
ॐकार स्वरुपी, आदि नाथजी ।
सत्य सनातन, परम सत्यजी ।।2।।
सोचे नाथजी , करुँ जन कल्यान ।
करदू सबको, परमोज्ञान ।।3।।
मोक्ष मुक्ति और आत्मज्ञान ।
सभी का होगा, महाकल्यान ।।4।।

(15)

तब आदिनाथ ने, ॐकार नाथ।
लिया अवतार, गुरु गोरखनाथ ।।1।।
गोरख नाथ, ज्योति स्वरुपा ।
नाथ अवतार में, बाल स्वरुपा ।।2।।
अलख निरन्जन, गुरु गोरख बानी ।
राजा रंग सन्त, कर जानी ।।3।।
नाथ कहे, श्री नाथ निरन्जन ।
दिया सभी को, महायोग ज्ञान ।।4।।

(16)

योग ज्ञान और ध्यान समाधि ।
चित्त बुद्धि और मन की उपाधि ।।1।।
तंत्र मंत्र और धर्म कर्म ।
आत्मतत्व का , बतलाया मर्म ।।2।।
और बनाये, बहु विध शिष्य ।
तब उपजे, नवनाथ सिद्ध ।।3।।
नाथ कहे और चौरासी योनी ।
सभी धर्म को, सिद्ध कर जानी ।।4।।
हिन्दु मुस्लिम, सिख ईसाई ।
सभी धर्म ने, गोरख अपनाई ।।5।।

(17)

ऐसी नवनाथ, सृष्टि उत्पति।
होय दर्शन, गोरक्ष जती।।1।।
जोही करता यह, पाठ और भक्ति ।
मिले धर्म अर्थ और मोक्ष मुक्ति।।2।।
सतगुरु अपने, भाव मधुर ।
दे दो आशीश, कृपा के सागर ।।3।।
ऐसी नवनाथ, सृष्टी उजागर।
नाथ विलास तो, करे नमस्कार ।।4।।

भजन

अलख निरन्जन अलख निरन्जन.....

नवनाथ शाबर मन्त्र

(नाथ सम्प्रदाय में विशेष प्रचलित नवनाथ नाम स्वरुप शाबर मन्त्र)

नवनाथ नाम स्वरुप मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश ।। ॐगुरुजी।।।
ॐकार आदिनाथ जी ॐकार स्वरुप बोलिये।

उदयनाथ पार्वती धरत्री स्वरुप बोलिये।
सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल स्वरुप बोलिये।
सन्तोषनाथ विष्णुजी खड़ग खाण्ड तेज स्वरुप बोलिये।
अचल अचम्भेनाथ (आकाश) शेष स्वरुप बोलिये।
गजबेलि गज कण्थड़ नाथ गणेश जी गजहस्ती स्वरुप बोलिये।
ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वनस्पति स्वरुप बोलिये।
माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ माया स्वरुप बोलिये।
घट पिण्डे नव निरन्तर सम्पूर्ण रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाल स्वरुप (ज्योति स्वरुप) बोलिये।

इतना नवनाथ नाम स्वरुप जाप मन्त्र
सम्पूर्ण भया ।

श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(नित्य पाठ)

आगे–आगे गोरख जागे

(1)

पावन आत्मा योगी साधे।
करे क्षमा जो जन अपराधे ।।
संत संगती उत्तमे लागे ।
विश्वात्मक भाव ही जागे ।।
शब्द शास्त्र क्लेश ही जानो ।
तब सन्त उपदेश ही मानो ।।
आत्म स्वरुपी दुनियां लागे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(2)

दैवी भाव को जो ही जाने ।
उच नीच सब सम ही माने ।।
आत्म सुख में जो ही चंगा ।
आप आनन्द रंग ही रंगा ।।
वेद पढ़ो ॐकार नादे।
शून्य द्रष्टा समाधी सादे ।।
नही रहो अभिमान क्रोधे ।
सुख शान्ति तितो साधे ।।
आत्मानन्द सदा ही मांगे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(3)

भगवा उपरी त्याग ही दिखे ।
अन्तर मनी काम ही राखे ।।
नही विवेक संयम होये ।
अपने आप में आपा खोये ।।
ऐसा साधु कैसा होये
जगी सर्वदा निन्दा होये ।।
आशा दंभ जो नहीं मांगे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(4)

दया क्षमा जो ही करते ।
जन उनको संत ही कहते ।।
लोभ लालच मन में नाही ।
त्याग वैराग्य सुखकर जोही ।।
ज्ञान शुद्ध जो जिनके मुख में ।
इह लोक में सदा ही सुख में ।।
मिथ्या माया नहीं जो लागे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(5)

गुरु बिनु जो सन्त होये ।
वही जीवन व्यर्थ ही ढोये ।।
अन्दर नहीं जो निर्विकारे ।
मन में माया जंजाल सारे ।।
ऐसी माया जब ही त्यागे ।
संत सुख जो उसको लाभे ।।
आदि अन्त अन्दर आये ।
विश्व ब्रह्म तिते पाये ।।
संत सतगुरु मिलन साजे ।
अनहद नाद पिण्ड में बाजे ।।
चिन्ता क्रोध कभी ना लागे ।
आगे–आगे गोरख आगे ।।

(6)

संत संगती ब्रह्म को पाये।
तितो माया नहीं सताये ।।
खेदा खेदी मन ना राखे।
अपना हाथ ही जगन्नाथे ।।
मुख में ब्रह्म भक्ति लागे ।
ब्रह्म रस को वही भोगे ।।

मन मारन कष्ट ही सांचे ।
ब्रह्म पद में वही नाचे ।।
मन पवन में योग ही साधे ।
ज्ञान चक्षु से ज्योत ही देखे ।।
सदा मन उनमन ही मागे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(7)

जग जंगम जो संयम सादे ।
ब्रह्म भाव में संसार ही लाधे।।
ऐसे ज्ञान चित्त में माने ।
संत वही जो जर्नाधने ।।
सुख–दुःख परे जो सम चन्दा ।
ध्यान समाधि मन में रंगा ।।
माया भोग दूर ही भागे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(8)

सदा सर्वदा आत्म ही सुखे ।
जनी मनी जो प्रेम ही राखे ।।
संत संगती सदा ही तारे ।
निरन्तर आत्म बोध ही करे ।।

संत सज्जन जिसका भाव ।
अन्तर भेद तितो पाव ।।
तरनो उपाव चित्त में लागे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(9)

ऋद्धि सिद्धियाँ जोही त्यागे ।
शुन्य समाधी तितो लागे ।।
काल लगे ना लिपे माया ।
मोक्ष मुक्ति उसने ही पाया ।।
वाद विवाद नाही जिसको ।
द्वैत द्वन्द नाही उसको ।।
माया जंजाल में ऐसा जिये ।
जल में होकर जल ना पिये ।।
मनी माया मद ही मांगे।
चित्त सर्वदा भ्रम में भागे ।।
कामी क्रोधी दंभ ही भारी ।
इन पतितो का कौन कैवारी ।।
मन पावन सदगुरु राखे ।
चित्त चिन्तन नाम ही राखे ।।
शुद्धि बुद्धि ध्येय में लागे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(10)

छंदी फंदी घर को त्यागे ।
गिरी कन्दरी रहनी लागे ।।
बन खण्डी में रहे एकान्ती ।
विषय वासना मन के अन्ति ।।
सदा सर्वदा स्वार्थ के नाम ।
कभी ना होये वह निष्काम ।।
ऐसे कैसे साधु सन्त।
परमार्थ का ना जाने अन्त ।।
रमता जोगी बहता पानी ।
शुद्ध भाव संत संग जानी ।।
गंगा शुद्धि हृदय ही भोगे ।
आगे–आगे गोरख जागे ।।

(11)

सभी साधना साधन करे।
और मोल भी उसका त्यागे ।।
तिते आत्मा दर्शन होये ।
आत्म अनुभव ज्ञान को पाये ।।

इसको सतगुरु कृपा ही कहते।
आत्मा आनन्द तिते चढ़ते ।।
गुरु कृपा ही जिसको तारे ।
वही सारा जग ही तारे ।।
सदा सर्वदा सन्त संगति।
नाथ विलास मन मांगे अन्ति।।
गुरु संगती सदा ही मांगे ।
आगे–आगे गोरख जागे।।

मांगना तो मरण है। मत मांगो भीख। मांगना से मरण भला यह गोरख की सीख।।

गोरक्ष सिद्ध शाबर तन्त्र

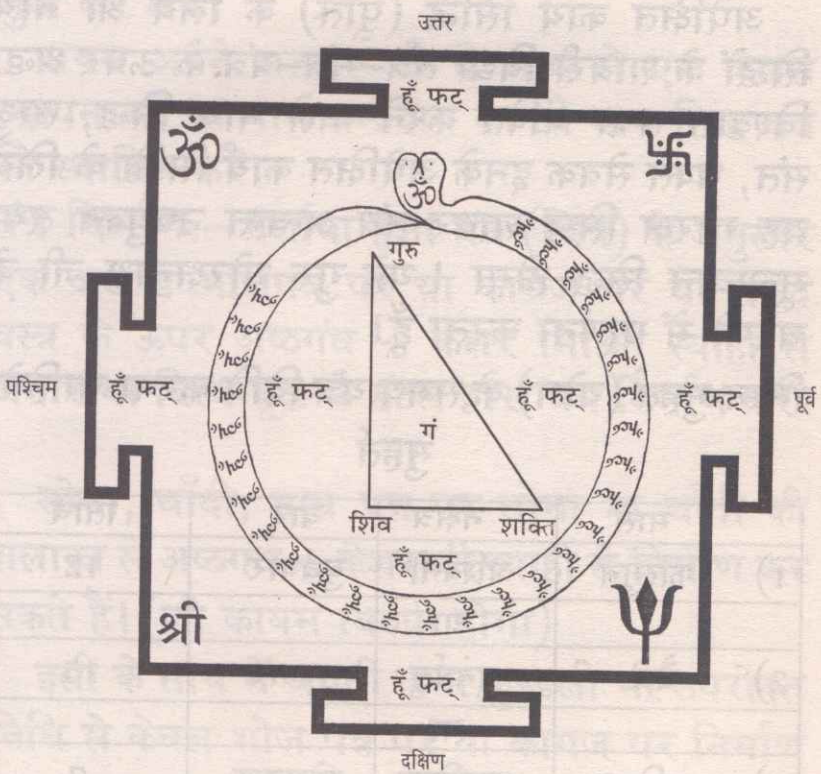

तेरे मन से मेरा उनमन अच्छा है, तेरे विवाद से मेरा मौन अच्छा है।
तेरी तपस्या से मेरी सेवा अच्छी है।
हे महामाया खोल घूंघट देख तेरे मिलन से मेरा वैराग्य अच्छा है।

श्री गोरक्ष सिद्ध शाबर तन्त्र

(संकट मोचन तथा इच्छा कार्य पूर्ति)

अपेक्षित कार्य सिद्धि (पूर्ति) के लिये श्री नाथ सिद्धों के शाबरी विद्या तंत्र–मंत्र–यंत्र के ऊपर श्रद्धा विश्वास तथा भक्ति करने वाले नाथ सिद्ध, साधु संत, भक्त सेवक इनके अपेक्षित कार्य सिद्धि के लिये यह गोरक्ष सिद्ध शाबर तंत्र अत्यन्त उपयुक्त तथा मूल्यवान सिद्ध होगा । यह गुरु गोरक्षनाथ जी के चरणों में प्रार्थना करता हूँ।

निम्न मुहर्त (योग) के समय यंत्र विधि करना चाहिये।

मुहर्त

	मास	नक्षत्र	वार	तिथि
1)	फाल्गुन	अश्विनी	बुधवार	12
		या		
2)	चैत्र	पुनर्वसु	गुरुवार	15
		या		
3)	अश्विन	मृगशिरा	सोमवार	7
		या		

होली, दिवाली, गुरु पूर्णिमा, नवरात्र या सोमवती अमावस्या।

उपरोक्त किसी भी एक मुहर्त पर निम्न यंत्र विधि कर सकते है।

यंत्र विधि–अपने घर के पूजा कक्ष में या किसी सिद्ध स्थल या मन्दिर में प्रथम साफ सफाई तथा कक्ष को धूप दीप से सुगंधित करें या गौ गौमुत्र छिड़क कर शुद्ध कर लेवें।

प्रथम अपने सतगुरु जी के नाम से एक कलश स्थापन करें या नाथ सम्प्रदाय का श्री नाथ सिद्ध यंत्र को स्थापित करें।

तंत्र निर्माण:– दर्शाया हुआ यंत्र (चित्र) के अनुसार एक अखण्ड भोजपत्र पर या कागज पर या सफेद वस्त्र के ऊपर अष्ठगंध + केशर मिश्रित स्याही से अनार या बिल्व वृक्ष के डंठल द्वारा यंत्र निर्माण करें।

या

सोना, चाँदी, ताम्र पत्र पर सोना या चाँदी की शलाका से अष्ठगंध + केशर की स्याही से निर्माण कर सकते हैं। (जो कायम स्वरुपी होगा)

इसी के साथ में अपनी जन्म कुण्डली भी उपरोक्त विधि से केवल भोज पत्र पर या कागज पर निर्माण कर जन्म कुण्डली बनवा लेवें।

(जन्म कुण्डली नहीं होवे तो केवल अपना नाम लिखकर स्थापन कर सकते है।)

अतः उपरोक्त यंत्र तथा कुण्डली एक ही स्थान पाटले के ऊपर स्थापन करें।

सभी कलश, यंत्र कुण्डली आदि की धूप दीप गंध अक्षदा पुष्प पत्र (बिल्व) से यथोपचारे पूजन कर लें और अपने दाहिने हाथ में अष्ठगंध मिश्रित अक्षद (चावल) लाल फूल थोड़ी सी राई लेकर अपने अपेक्षित कार्य की पूर्ति या सिद्धि पूर्ण करने हेतु गुरु गोरक्ष नाथ जी की प्रार्थना अर्थात संकल्प करके वह अपने कुण्डली या नाम को स्पर्श करके निर्मित यंत्र के ऊपर छोड़ दे। तद उपरान्त आप यहां श्री नाथ सिद्ध कवच या नाथ सिद्ध पाठ अनुष्ठान पाठ कर सकते हैं।

मन्त्रः–ॐ नमो गं गोरक्षनाथाय मम् संकट... निवाराय हूँ हूँ फट् स्वाहा, मम.....(अमूक) कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहाः

मन्त्र विधिः–यहां संकट की जगह अपने ऊपर आये हुये संकट को उच्चारण करें। अगर कोई संकट नहीं हो तो सरल "मम संकट निवाराय" कह सकते हैं।

उसी प्रकार.....अमुक कि जगह आप अपने अपेक्षित कार्य का जो संकल्प किया हो उसका उच्चारण करें।

इस प्रकार उपरोक्त मंत्र को रोज प्रतिदिन सवा घण्टा जप (ध्यान) करना चाहिए।

तद उपरोक्त

इस यंत्र को कच्चा रोट या संक्षिप्त 7 प्रकार की मिठाई या दूध+मिश्री का भोग लगा के उसे प्रसाद रुप से स्वयं (साधक) ही ग्रहण करे। यह विधि सवा महीना करनी चाहिए।

उत्तरार्ध विधि:–अन्तिम दिन को नित्य यंत्र की पूजा पाठ मंत्र जाप के उपरांत हवन कुण्ड तैयार करके गौ घी या देशी घी तथा हवन सामग्री में काले तिल+जव+पंचमेवा मिलाकर उपरोक्त मंत्र का सवा घण्टा हवन करें ।

रोट का भोग लगावो अत: अपने दाहिने हाथ में उपरोक्त अष्ठगंध मिश्रित अक्षद (चावल)+लाल पुष्प+थोड़ी सी राई लेकर प्रथम श्री गोरक्ष सिद्ध यंत्र को स्पर्श करते हुये अपेक्षित कार्य का उच्चारण करते हुये अपनी कुण्डली या नाम के ऊपर छोड़ देवे और प्रसाद केवल खुद ग्रहण करे। तथा किसी नाथ संत को या साधु को यथोपचारे दान करे साधु ना मिले तो मन्दिर में दान कर सकते है।

इतना करके अन्त में अपना कार्य सम्पन्न के पश्चात निर्माल्य को बहते जल में विर्सजित करे या पूजा कक्ष में उपरोक्त यंत्र (विशेषता धातु का निर्मित) कायम

स्वरुपी रख सकते हैं। (रखना चाहिए)।
अपनी श्रद्धा भक्ति अनुसार उपरोक्त यंत्र कर्म से आपका अपेक्षित कार्य सिद्ध होगा।
यंत्र रचना में (पृष्ठ संख्या 77)

1. यंत्र के चारों द्वार में चार दिशा में हूँ फट्
2. सपीकृर्ता वर्तूल में 28– हूँ फट्
3. मध्य त्रिकोन में 3 दिशा में 3 हूँ फट्
4. यंत्र के चारों कोन में उनमें ॐ 卐 श्री ψ
5. त्रिकोन के तीन कोन में अन्दर में गुरु, शिव, शक्ति

-: गुरु-शिष्य बोध :-

आकाश आँखों में कैसा बसे, हवा कर्ण में कैसे बसे। अग्नि रुप में कैसे जले, जल थल में कैसे बसे।
धरती हृदय में कैसे तोले। जवाब जरुर देना चेले, होंगे गुरु खुश तुम्हारे।
तीसरे नेत्र में आकाश (ब्रह्माण्ड) बसे। ॐकार नाद कर्ण में बसे।
विकार द्रष्टा अग्नि रुप जले। जल शांती जड़ में बसे। हृदय प्रेम से धरती तोले।
ऐसा चेले तुम करो जतन, गुरु तुम्हारे होंगे आनंद मंगन।

बुद्धिदाता शाबर मंत्र

(विद्या, ज्ञान, स्मरण शक्ति आदि की प्राप्ति हेतु)

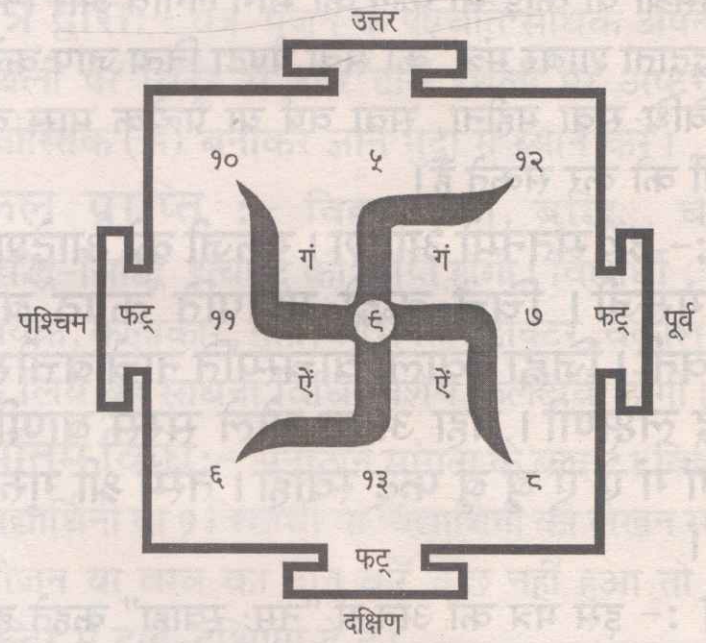

उपरोक्त यंत्र भोजपत्र या कागज पर केशरयुक्त सिंदूर या अष्टगंध की स्याही से, आक की शलाका से निर्माण करें। (धातु पर भी कर सकते हैं।) इसे पूजा-स्थान में स्थापन करें।

यंत्र-पूजन :- यंत्र को सिंदूर, अष्टगंध केशर युक्त और अक्षद का तिलक करें। पहले जल या पंचामृत से स्नान करायें, तिलक लगायें। फूल, बेलपत्ती चढ़ायें।

कनेर का फूल और 21 दूब चढ़ायें। धूप-दीप दिखाये और अंत में मोतीचूर के लड्डू या (मोदक) का भोग या दूध+मिश्री या कोई भी फल का भोग लगावें और निम्न "बुद्धिदाता शाबर मंत्र" का सवा घण्टा नित्य जाप करें। यह विधि सवा महीना, सवा वर्ष या प्रत्येक मास की चतुर्थी को कर सकते हैं।

मंत्र :- ॐ सतनमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। चित्त बुद्धी गणपति कण्ठ बसे सरस्वती। जिह्वा ज्वाला वाचस्पति नाचे बत्तीसी सिद्ध लक्षणी। तहा अधर बोले सरस बाणी। ॐ गं गं ऐं ऐं बृं बृं फट् स्वाहा। तस्मै श्री गुरुवे नमः।

हवन :- इस मंत्र को अंत में "नमः स्वाहा" कहते हुये विधि के अंत में हवन सवा घण्टा करें। हवन सामग्री (साकल्य) और गौ-घृत से हवन करें।

साधना :- यंत्र-पूजन के बाद 21 प्राणायाम करें। कुंभक करते समय प्राण कंठ में रखे या काकी मुद्रा करें। या जालंधर बंध लगाये या शीश (गला) को वर्तुलाकार घुमाये (दोनों दक्षिण-उत्तर दिशा से) यह विधि 5 मिनट से 10 मिनट तक करें।

इस प्रकार से साधना करते हुये मंत्र सिद्धि शीघ्र फलदायी होगी।

तंत्र द्वारा:- यंत्र-पूजन के पश्चात साधक अपने बायें हथेली पर सिंदूर से और दायें हथेली पर अष्टगंध से स्वास्तिक (卐) बनाकर ज्ञान मुद्रा में ध्यान करें।

फल प्राप्ति :- विद्या, ज्ञान, बुद्धि , चेतना, ऋद्धि-सिद्धि इत्यादि की प्राप्ति होगी। विद्यार्थी , कवि, गायक, कलाकार, नेता, अभिनेता, डॉक्टर, वकील आदि के लिये यह साधना विधि विशेष फलदायी होगी।

अंतिम विधि:- अनुष्ठान सांगता के बाद 21 विद्यार्थी/ विद्यार्थिनी या 9 विद्यार्थी या विद्यार्थिनी को लेखन साहित्य भोजन या वस्त्र का दान करें कुछ नहीं हुआ तो अपने मन्दिर में दान-दक्षिणा दे दें।

आरती

(गुरु गोरक्ष नाथजी की)

जय देव जय देव जय गोरख नाथा।
आरती उतारु हम निरंजन नाथा ।।
गोरक्ष गोरक्ष, रुप ॐकार नाथ।
त्रिगुणी अवतार, त्रैलोक्य नाथ।।
नेती नेती शब्द, ॐकार नाद।
ज्ञानी ध्यानी तप करत तो देते है साद।।
जय देव, जय देव.....।।1।।
शिव शक्ति रुपी तुम, सुख दुःख भंजन।
जती सती रुपी तुम, अलख निरंजन।।
सर्व साधु संतों में, तुम चैत्यन्य नाथ।
टारे मारे संकट में, देते हो साथ ।।
जय देव, जय देव.....।।2।।
गोरक्ष गोरक्ष मन, ध्यान सुन्दर।
भयी निर्मल काया, निज आत्मा अन्दर।।
हर ली चिन्ता भय, भव सागर पार।
जन्म मृत्यु टले, चौरासी का फेर।।
जय देव, जय देव.....।।3।।
भये प्रगट गोरक्ष, असंख्य युगी।
दिव्य अवतार, ॐशिव गोरक्ष योगी।।

जती गोरखनाथ आये, परब्रह्म रुप।
योग चमत्कार मिटे, सब मायावी भ्रम।।
जय देव, जय देव.....।।4।।
गले रुद्र माल, मस्तक त्रिपुण्ड भस्मी।
कटी बाघाम्बर चिमटा, खप्पर ही हाती।।
भैरव हनुमन्त, सदा सन्मुख रक्षति।
नव दुर्गा जोगन, शक्ति करते है भक्ति।।
जय देव, जय देव.....।।5।।
नित्य नित्य ध्यान, सुर नर मुनि करती।
नाथ सिद्ध दर्शन, मेला करे हो भक्ति।।
देखो–दखो सिद्धो, गुरु गोरखनाथजी आये।
अनन्त कोट सिद्ध, जय जयकार करे।।
नाथ विलास कहे, भजो शिव गोरख योगी।
गुरु शिष्य परमात्मन, मिल आनन्द भोगी।।
जय देव जय देव, जय गोरक्षनाथा।
आरती उतारे हम, निरंजन नाथा ।।6।।

: फकीरा :-

हम पंछी आजादी के, किलबील हमारी एकांत की। कहे संसार तुम फकीरा, मेरा उजाला,
मैं खड़ा जो भाग्य के द्वारी देखी रंगी बेरंगी माया सारी, मारी फेरी जन्मोजन्मी।
सुख-दुःख के घर छोडे, गुरु गोरख ध्यान लगाये,
गंगा जमुना से दिल को धोया अलकनंदा से अलख जताया,
काया मंदिर में घंटा बजाया, ॐकार नाद से पट को खोला।
सूर्य रुप में सद्गुरु पाया, ज्ञान प्रकाश का भया उजाला।

भजन

सतगुरु परिक्रमा

धन्य धन्य है, परिक्रमा सतगुरु नाथों की।
होंगी कृपा सत्वर दर्शन आत्माराम की ।।1।।
क्षणो क्षणी, अपरम्पार, पुण्य संच राशी ।
सभी तीर्थ है, चरण कमल में, शिव शम्भो काशी।।
धन्य धन्य.....।।1।।
मृदंग ताल, ढोल बाजे, सत गुरु प्रेमानन्दी।
नाम संकीर्तन, नाचे भक्त, ब्रह्म आनन्दी।।
धन्य धन्य.....।।2।।
जन्म मरण के, बन्धन काटे, किये योग युक्ति।
गुरु मंत्र का, ध्यान धारे, मिले मोक्ष मुक्ति ।।
धन्य धन्य.....।।3।।
अगम निगम ना, जाने महिमा, सतगुरु भक्ति का।
जीव शिव में, मिले तत्पर, सतगुरु संगी का ।।
धन्य धन्य.....।।4।।

ज्ञान ध्यान में, सच्ची भक्ति, जानो तो बिरला ।
और प्रचिति, पारस मनी, सोम कान्ता जैसा ।।
धन्य धन्य.....।।5।।

परिक्रमा ही, करते–करते, आत्माराम देखा।
प्रगट भये जो गुरु गोरख, नाथ विलास देखा।।
धन्य धन्य.....।।6।।

धन्य–धन्य है, परिक्रमा, सतगुरु नाथों की।
होंगी कृपा सत्वर दर्शन आत्माराम की ।।

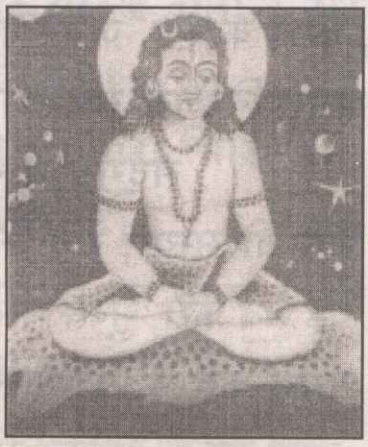

-: मंजिल :-

ए राही क्यूँ भटकते हो, तुम्हारी मंजिल तो सद्गुरु जी के पास ही है।
जरा अपने दिल में झांक कर तो देख, वही तुम्हारे दिल में तुम्हारा इंतजार कर रहे है।
तलाशते तलाशते एक दिन वह तुम्हारे घर आये थे।
क्या नजारा था जब संसार सागर में नाव चलाये थे।
याद करना उन्हें जब तुम्हारे दिल में प्रेम भक्ति का दीपक जलाये थे।

सद्गुरु प्रार्थना

सद्गुरु नाथा, नमन करुँ मैं, दर्शन तो दे दो।
मन मन्दिर में, वास करके पावन मम कर दो ।।
प्रति दिन प्रातः बैठु आसन, मम कारण वर दो।
हृदय निवासी दया ही करके, परिवर्तन दे दो ।।1।।

सद्गुरु नाथा.....

उपकार तुम्हरे, बहुत हुए हैं, तुम कारण तन देऊँ ।
उपदेश तुम्हरे, इहपर नश्वर, मन उनमन पाऊँ।।2।।

सद्गुरु नाथा.....

कौन कहां पर, कौन कारण, जन–मन–तन दे दूँ।
करो मम ऐसा, अलख निरंजन, सब सम जन देखूँ।।3।।

सद्गुरु नाथा.....

संसार सागर, भ्रम तो माया, मन निर्मल कर दो।
जन्म मरण का, यह सब फेरा, मुक्त मम कर दो ।।4।।
सद्गुरु नाथा, नमन करुँ मैं, दर्शन तो दे दो।
मन मन्दिर में, वास करके, पावन मम कर दो।।

-: आत्म परिक्षण :-

पाप-पुण्य की महफिल में जमीर का सिंहासन हिलने लगा,
विवेक बाण से वार किया तो पाप-पुण्य भागने लगा।
जमीर मुझको पुकारने लगा, मैं में मैं समाने लगा।

सन्त महिमा (भजन)

प्रेम नगर के साधु हम।
चारों दिशा में जाते हैं।
रुखी सूखी पाकर हम।
गुरु गुण को गाते हैं ।।1।।
बुद्धि हमारी माता है।
ज्ञान हमारा पिता रे।
विवेक हमारा शस्त्र है।
गुरु गोरख दाता रे ।।2।।
कर्म हमारी खेती है।
शब्द हमारी सिद्धि रे।
प्रेम हमारा भोला है।
धर्म हमारा नाता रे ।।3।।
भक्त हमारे भावुक है।
भाव हमारा साफ रे।
भक्ति हमारी शक्ति है।
गुरु नाम से मुक्ति रे ।।4।।

प्रेमसागर में नाम चलाये तो भव सागर में अटक गये थे। जब गुरुजी नाव चालाने लगे तो पार किनारा लगाये थे।

सन्त हमारे भगवान हैं।
त्याग हमारी शान रे।
सत्य हमारा ईश्वर है।
ना मांगे भी जो देता है ।।5।।
भेष हमारा बलवान है।
भगवा अलख निशान रे।
सतगुरु हमारी प्रीत है।
शिष्य नाता अटूट रे ।।6।।
सतगुरु हमारा आनन्द है।
जिनकी बाणी धार रे ।
कृपा हम पर अगाध है।
नाथ विलास जो गात रे ।।7।।
प्रेम नगर के साधु हम।
चारों दिशा में जाते हैं।
रुखी सूखी पाकर हम।
गुरु गुण को गाते हैं।

शब्द विलास

आज भी है

तलाशते तलाशते, सतगुरु दर्शन दिखलायेंगे।
क्या मन की यह मुराद पुरी होगी यह
तमन्ना आज भी है.....
कसम है खुदा की सतगुरु साहब इस ख्याल में आज भी है। काया घट में यह चेतन चिराग आज भी है।
मुमकिन है यह मनमुराद आसमा पर छू सके।
क्या खुशनसीब हम इन्तजार आपका आज भी है।
ठिठकती हुयी कोई पहचानी धुन्ध दिल में आज भी है। क्या होगा दर्शन आपका यह हल्की सी आस आज भी है।
जिन्दगी का सफरनामा लिपटी माया बडी ठगनी है। होंगे दरश आपके यह बहार आज भी है।
सतगुरु लायेंगे एक दिन लौट आने का बुलावा हर पल था, हरदम है, यह इन्तजार आज भी है।

भी तो नहीं है

क्या कहू यह अज्ञान अन्धेरा शाश्वत भी तो नहीं है।
फिर भी ज्ञान का सूर्योदय अभी भी तो सम्भव नहीं है।।1।।

मायावी संसार से भी तो कैसे हो पलायन, अज्ञानी
भ्रम का यह दुनियाँ में प्रलय भी तो नहीं है। ।।2।।

दिशा दिशाओं में भला देख रहा हूँ तुम्हे भगवंत,
पर क्या करे यह माया भ्रम का विलय भी तो नहीं है। ।।3।।

सब कुछ छोड़कर आ जाऊंगा मैं, किन्तु क्या तुम
मुझे नहीं अपनाओगे, यह तय भी तो नहीं है।।4।।

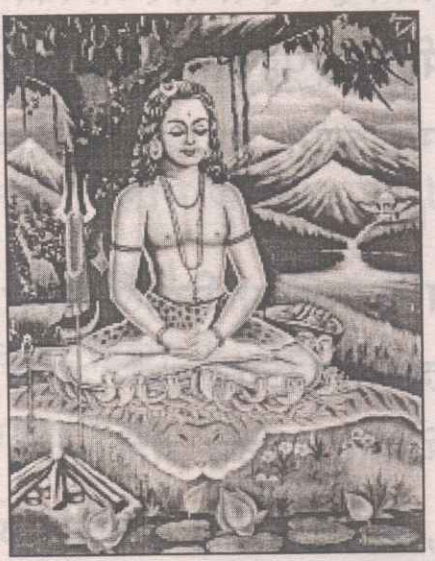

अन्तरात्मा

गुफ्तगू अन्तरमुख निगाहे एतबार है।
अन्तर आत्मा का। दिलपर हो गया अखिर
इख्तियार दिलदार अन्तर आत्मा का ।।1।।
मद मत्सर ममता से किसने भर दिया आशियाना।
पर ढल गया मन से सब खुमार अन्तरात्मा का ।।2।।
खेंचता हूँ प्राण–पाण बारम्बार नाज है जिन्दगानी का।
क्यों खयाल आता है। बार–बार अन्तरात्मा को
अजमाने का ।।3।।
जब ये परदा ये दिल पर नक्शे उभरा महामाया का
तब से घायल हो गया हूँ खास कर इस संसार
का।।4।।
मौज मस्ती भरी है यह नशे ली जिन्दगानी। नशा
तो कुछ और ही है अन्तर आत्मा अजमाने की ।।5।।
एक तुम्हारे ध्यान के गहरे दरियाँ में डूब–डूब सा
जाता हूँ। दर्शन जब भी होता है तुम्हारा रुप निहारता
हूँ ।।6।।
कभी ठुकरा न देना तुम कुछ तो करो भगवंत।
दावते दोगे जब मरण की तो मिल जाऊंगा आप
में अनन्त ।।7।।

पाठ विधि

1. यह श्री नाथ सिद्ध पाठ विधि सभी साधु सन्त नर, नारी, भक्त गण बड़ी श्रद्धा और भक्ति से कर सकते हैं।
2. पाठ निःस्वार्थ भक्ति से करना सर्वोत्तम है।
3. पाठ के सभी पद, कण्ठस्थ करना चाहिये ।
4. इस श्री नाथ सिद्ध पाठ में सभी पाठों को अलग–अलग विधि से पृथक–पृथक भागों में कर सकते हैं। तथा संलग्न रुप से भी कर सकते है।
5. यह सभी प्रकार के पाठ, आरती, भजन इत्यादि सार्वजनिक, धार्मिक उत्सव, नाथ भण्डारे, मेलों में, गुरु पूर्णिमा पर्व पर श्री नाथ जी के जागरण (रात्री के ज्योत जागन) पर्व में विविध संगीत देते हुये भक्ति से गायन भी कर सकते हैं।
6. यह श्री नाथ सिद्ध पाठ अनुष्ठान उपासना अपने इष्ट के सन्मुख विधिवत भी कर सकते है।

★ सुर्चिभूत होकर एकान्त में एकासन पर अखण्ड पाठ करना तथा अखण्ड ज्योत जगा ना भूमि पर ही सभी कर्म करना, हजामत, नशा इत्यादि नहीं करना, इत्यादि नियम द्वारा भी, उपासना कर सकते हैं।

★ सवा महीना, सवा वर्ष अखण्ड पाठ अनुष्ठान विधि कर सकते हैं।

★ मानस पूजा से भी कर सकते हैं।

7. श्री गोरक्ष सिद्ध शाबर तंत्र का विधि अलग से, दर्शाये हुये नियम अनुसार अपेक्षित कार्य पूर्ति तथा संकट निवारण हेतु भी कर सकते हैं।

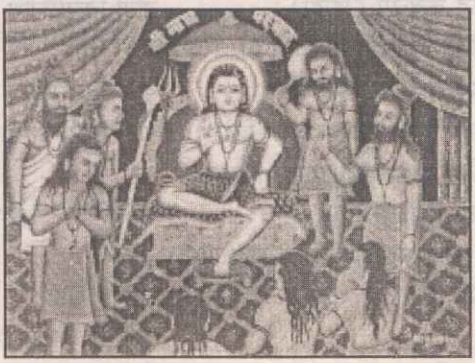

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

—:पुस्तक प्राप्ति स्थान:—

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार—249401 (उत्तरांचल) फोन:01334-226583

web site: www.yogigorakshnath.org

e-mail: media @ yogigorakshnath.org

*

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह. जिला रोहतक (हरियाणा), फोन: 234804

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ पुजारी	170/-
2. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ पुजारी	250/-
3. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ पुजारी	400/-
4. श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ पुजारी	55/-
5. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ पुजारी	40/-
6. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ पुजारी	125/-
7. श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ पुजारी	30/-
8. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ पुजारी	5/-
9. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु योगी विलासनाथ पुजारी)	120/-
10. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ	30/-
11. गोरक्ष स्तवान्जलि	योगी भंभूलनाथ	15/-
12. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ	5/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
13. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ	10/-
14. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
15. गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
16. श्री नाथ चरित्र	वीरनाथ जी	70/-
17. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	वीरनाथ जी	8/-
18. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	शंकरनाथ योगी	20/-
19. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
20. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
21. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-
22. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	सिद्ध योगी शंकरनाथ जी	50/-
23. भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	3/-
24. भारत दर्शन	योगी भंभूलनाथ	4/-
25. श्री नवनाथ उपदेशामृत (अंग्रेजी)	योगी भंभूलनाथ	2/-
पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
26. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
27. गोरखबाणी	डा. पीताम्बर बड़थ्वाल	70/-
28. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
29. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
30. गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-
31. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
32. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-
33. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
34. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
35. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
36. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-
37. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
38. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
39. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
40. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
41. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
42. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
43. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
44. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
45. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
46. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
47. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
48. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
49. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
50. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
51. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
52. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
53. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
54. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
55. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
56. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
57. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र

(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर (पॉलिश) मूल्य
3 X 3 इंच	35/-	40/-
5 X 5 इंच	45/-	55/-
7 X 7 इंच	80/-	90/-
9 X 9 इंच	220/-	240/-
12 X 12 इंच	275/-	300/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
बड़े फोटो B/C = 7" X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B/C = 7" X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB/C = 10" X 5"	25/-	
बड़ा फोटो BBB/C = 10" X 8"	35/-	-
छोटे फोटो B/C = 5" X 3.5"	5/-	-

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	10/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	5/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	3/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो		3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	5/-	65/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	5/-	65/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	20/-	250/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	25/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	25/-
नाथ सम्प्रदाय की अन्य भजन कैसेट		25/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार (आठ कैसेट तथा बाबा मस्तनाथ महिमा पृथक कैसेट)		160/-
अन्य देवताओं की प्रचलित भजन कैसेट		30/-

धातु की मूर्तियाँ

पीतल धातु (1) गोरक्षनाथ मृगस्थली	8.5 "	600/-
(2) आगे-आगे गोरख जागे	10 "	500/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीश फ्रेम (3 X 2 इंच, 5 X 3.5 इंच, 7 X 5 इंच)	20/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीश मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 220/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीश फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	3/-, 4/-, 5/-, 6/-, 20/-, 15/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले	5/-, 8/-, 10/-, 12/-
नादि पवित्री (चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	25/-, 10/-, 40/-, 40/-, 20/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-
सी. डी. या फ्लॉपी	35/-

(मूल्य सूचि में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट- मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम **D. D.** भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा **V.P. L ., V.P.P.** से भेजा जायेगा। अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

मुद्रक- शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार। फोन-228796

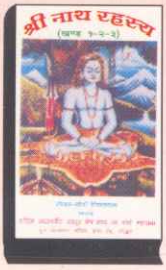

मूल्य 170/-

मूल्य 30/-

मूल्य 250/-

मूल्य 5/-

मूल्य 55/-

मूल्य 15/-

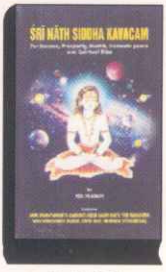

मूल्य 125/-

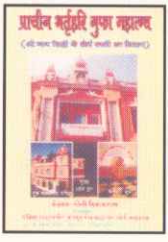

मूल्य 30/-

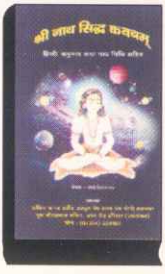

मूल्य 40/-

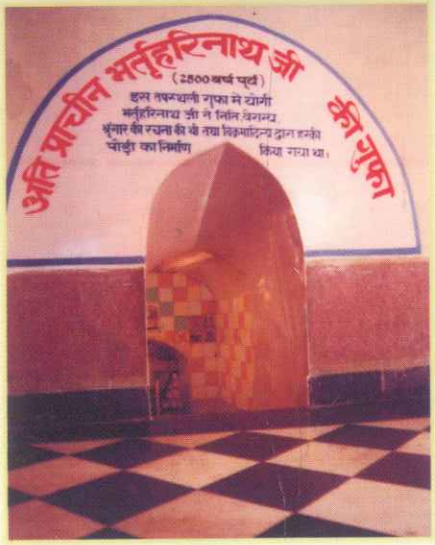

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, श्रृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हरकी पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान-**अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) अपर रोड, हरिद्वार**

प्रकाशक-**श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा**

मुद्रक- शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार। फोन-228796